2025 Latest Edition

e-Booklet

Subect PHILOSHOPHY

Professors Adda

Updated as per NEW UGC trend

Highly Useful for UGC NET JRF / SET / PG (CUET (PG) Asst Professor

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

BOOKLET NOTES

FEATURES

- संपूर्ण सिलेबस का कवरेज – सभी यूनिट्स और टॉपिक के साथ गहराई से विश्लेषण
- 10 यूनिट्स – टॉपर्स और विषय विशेषज्ञ प्रोफेसरों द्वारा व्यवस्थित रूप से तैयार की गईं
- हर टॉपिक के साथ जरूरी शब्दावली, मूल अवधारणाएं और प्रमुख विचारकों की समझ
- 2025 के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अपडेटेड संस्करण
- तेज़ दोहराव के लिए फ्लोचार्ट, माइंड मैप्स और सारणीबद्ध प्रस्तुति
- रंग-बिरंगे, आकर्षक और बिंदुवार नोट्स – पढ़ने में आसान, समझने में तेज़

BENEFITS

- कंसेप्ट क्लियरिटी के साथ लंबे समय तक याद रहने वाली स्मार्ट रणनीति
- समय और पैसे – दोनों की बचत
- नोट्स खुद बनाने की झंझट खत्म
- पर्सनल मेंटरशिप का लाभ – गाइडेंस हर स्टेप पर
- 1 साल की प्रीमियम ग्रुप मेंबरशिप के साथ लगातार सपोर्ट
- 100% रिजल्ट ओरिएंटेड – वन स्टॉप सॉल्यूशन

PROFESSORS ADDA

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111 +91 9216228788

E-BOOKLET INDEX

INDEX

1. UNIT WISE THEORY NOTES WITH EXAM FACT
2. ONELINERS AMRIUT FACT
3. MCQ BNAK WITH DETAIL EXPLANATION

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

दर्शनशास्त्र इकाई 1 SAMPLE

विषयसूची

1. भारतीय दर्शन का परिचय
   - भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ
   - भारतीय दार्शनिक स्कूलों का वर्गीकरण (आस्तिक और नास्तिक)
2. वैदिक और उपनिषदिक विश्वदृष्टि
   - ऋत (ब्रह्मांडीय व्यवस्था) की अवधारणा
   - यज्ञ की अवधारणा
   - कर्म का सिद्धांत
   - ब्रह्म और आत्मा की अवधारणा (अद्वैतवाद)
   - पंचकोश (आत्मा के पांच कोष)
   - चेतना की अवस्थाएँ (जाग्रत , स्वप्न , सुषुप्ति , तुरीय)
3. नास्तिक (विषमलिंगी) विद्यालय
   - चार्वाक (लोकायत)
   - जैन धर्म
   - बुद्ध धर्म
4. आस्तिक (रूढ़िवादी) स्कूल
   - सांख्य
   - योग
   - न्याय
   - वैशेषिक
   - मीमांसा

- वेदांत (अद्वैत , विशिष्टाद्वैत , द्वैत)

1. भारतीय दर्शन का परिचय

सामान्य विशेषताएँ

- भारतीय दर्शन विचार की एक समृद्ध और विविध परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जो हजारों वर्षों में विकसित हुई है।
- इसका प्राथमिक उद्देश्य सिर्फ बौद्धिक जिज्ञासा को संतुष्ट करना नहीं है, बल्कि सार्थक जीवन जीने के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करना है।

- यह भारतीय उपमहाद्वीप की संस्कृति और धर्म के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है।

आध्यात्मिक प्रकृति

- दुःख) की सार्वभौमिक समस्या का समाधान खोजना है।
- यह खोज केवल अकादमिक नहीं है, बल्कि परम मुक्ति की आध्यात्मिक खोज है, जिसे ' मोक्ष ' के रूप में जाना जाता है।
- यह एक ' दर्शन ' के रूप में कार्य करता है, जिसका अर्थ है सत्य का दर्शन और जीवन पद्धति, न कि केवल विचार प्रणाली।
- संसार ') के चक्र से परे जाना है।

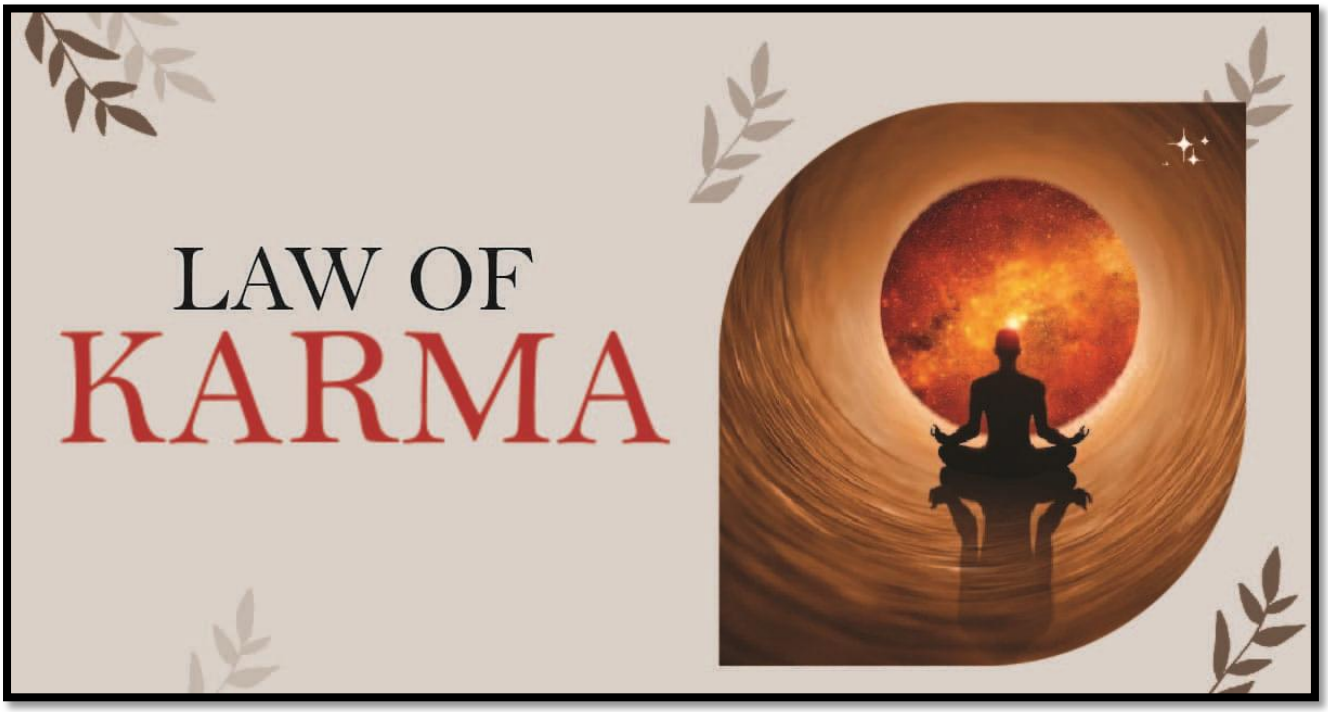

कर्म का नियम

- यह नियम यह मानता है कि प्रत्येक क्रिया, विचार और शब्द का एक अनुरूप प्रभाव होता है।
- ऐसा माना जाता है कि हमारी वर्तमान जीवन स्थितियां हमारे पिछले जन्मों के कर्मों का प्रत्यक्ष परिणाम हैं।
- इसी प्रकार, वर्तमान में हमारे कार्य हमारे भविष्य के अनुभवों को आकार देंगे।
- यह अवधारणा व्यक्ति के अपने भाग्य के प्रति नैतिक जिम्मेदारी की प्रबल भावना को बढ़ावा देती है।
- कर्म को प्रायः तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है: ' संचित ' (अतीत के संचित कर्म), ' प्रारब्ध ' (पिछले कर्मों का वह भाग जो वर्तमान में फल देता है) और ' क्रियमाण ' (वर्तमान कर्म)।

आत्म-साक्षात्कार पर जोर

- भारतीय दर्शन में अंतिम लक्ष्य सत्य को केवल बौद्धिक रूप से जानना नहीं है, बल्कि उसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करना है ।
- इसमें परम वास्तविकता की सहज और अनुभवात्मक समझ शामिल है।
- इस परम वास्तविकता को वेदांत में 'ब्रह्म' और बौद्ध धर्म में 'निर्वाण' कहा गया है।

- आत्म-साक्षात्कार का अर्थ है स्वयं ('आत्मा') की वास्तविक प्रकृति और परम वास्तविकता के साथ उसके संबंध को समझना।

व्यावहारिक आवश्यकता

- दर्शनशास्त्र को मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य, जिसे ' पुरुषार्थ ' के नाम से जाना जाता है, की प्राप्ति के लिए आवश्यक माना जाता है।
- चार पुरुषार्थ हैं - धर्म (धार्मिक आचरण), अर्थ (भौतिक समृद्धि), काम (इन्द्रिय सुख) और मोक्ष (मुक्ति)।
- जबकि पहले तीन संतुलित जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं, मोक्ष को सर्वोच्च और अंतिम लक्ष्य माना जाता है।
- इसलिए, दर्शन जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति के लिए व्यावहारिक मार्ग के रूप में कार्य करता है।

भारतीय दार्शनिक विचारधाराओं का वर्गीकरण

- भारतीय दार्शनिक प्रणालियों को मोटे तौर पर दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है: आस्तिक (रूढ़िवादी) और नास्तिक (विषमपंथी)।

- इस वर्गीकरण का आधार वेदों की प्रामाणिकता की स्वीकृति या अस्वीकृति है।

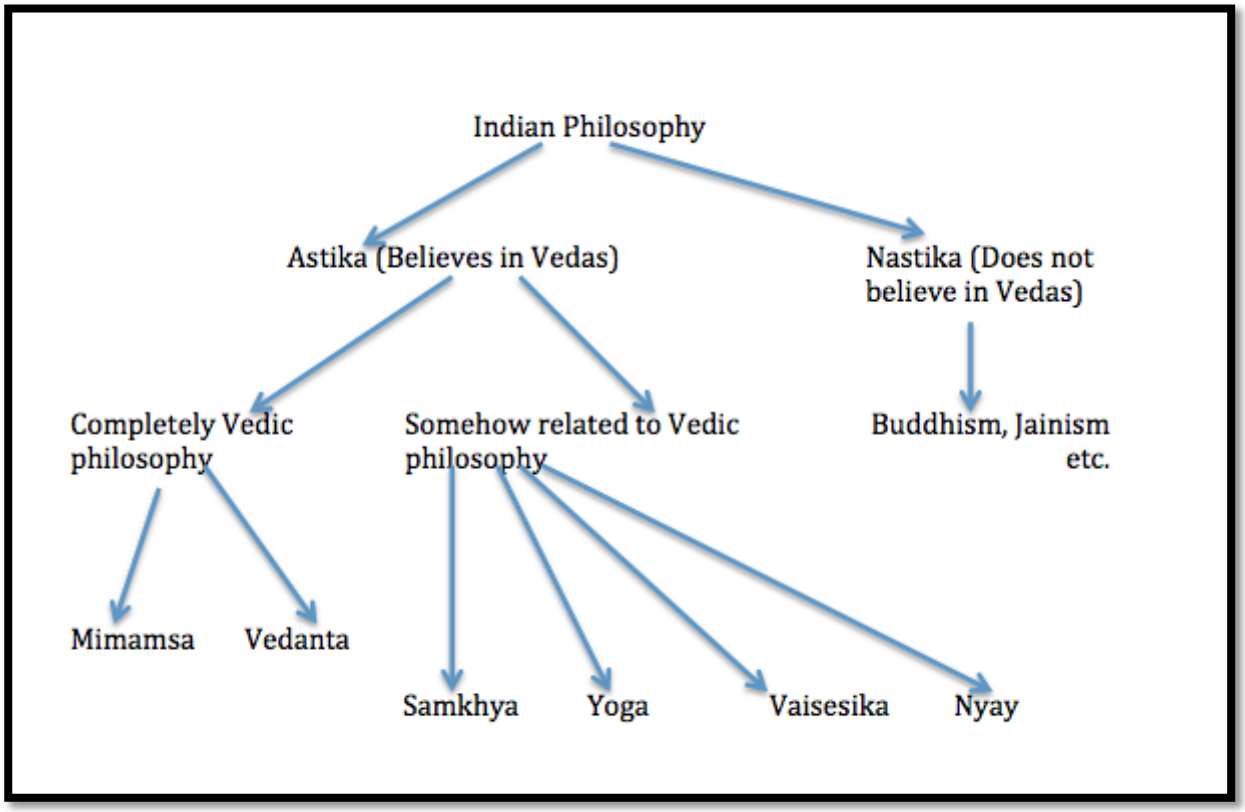

आस्तिक (रूढ़िवादी स्कूल)

- आस्तिक प्रणालियाँ वेदों को ज्ञान के सर्वोच्च और अचूक स्रोत के रूप में स्वीकार करती हैं।
- रूढ़िवादी दर्शन के छह प्रमुख स्कूल हैं, जिन्हें अक्सर उनके तार्किक संबंधों के कारण तीन जोड़ों में बांटा जाता है।
- यद्यपि वे सभी वैदिक प्रमाण को स्वीकार करते हैं, फिर भी उनके विशिष्ट सिद्धांतों और व्याख्याओं में काफी भिन्नता है।

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

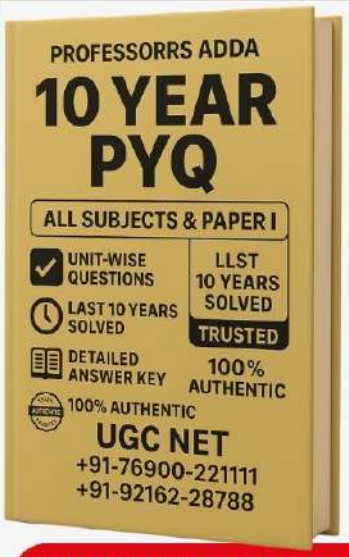

CLICK HERE

NEW PRODUCT

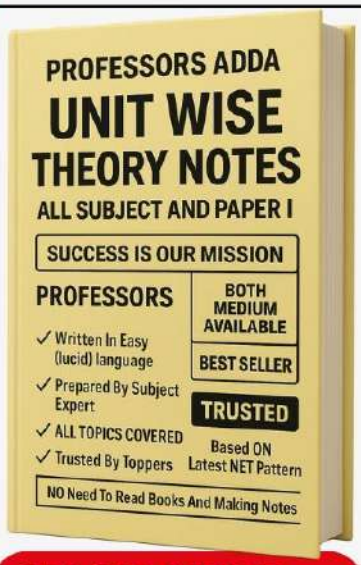

CLICK HERE

NEW PRODUCT

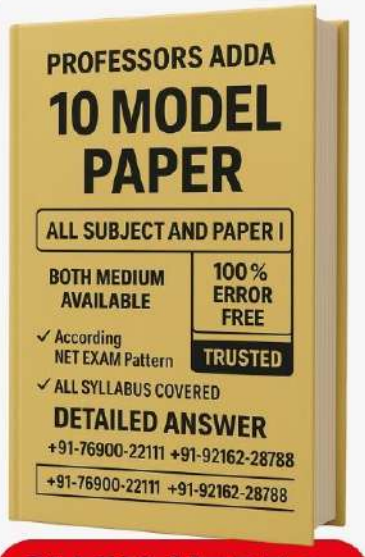

CLICK HERE

NEW PRODUCT

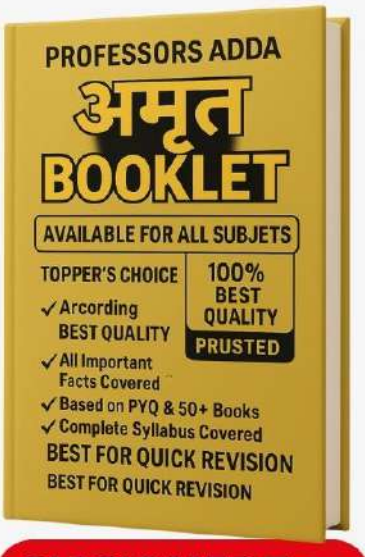

CLICK HERE

NEW PRODUCT

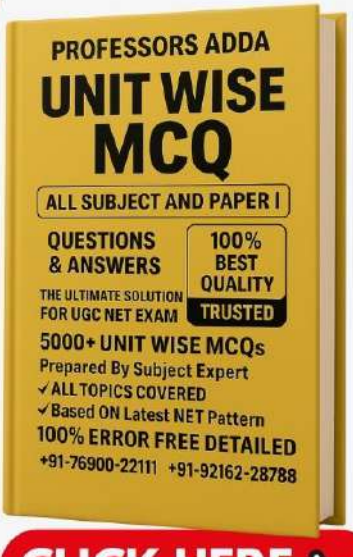

CLICK HERE

NEW PRODUCT

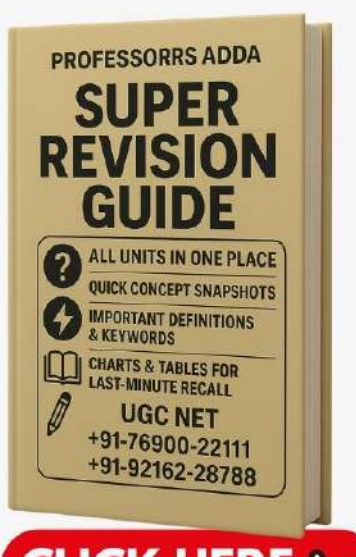

CLICK HERE

+91 7690022111+91 9216228788

- **ये छह स्कूल हैं:**
  - **न्याय :** तर्क और ज्ञानमीमांसा का विद्यालय, जो वैध ज्ञान प्राप्त करने के साधनों पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - **वैशेषिक :** तत्वमीमांसा का एक परमाणुवादी और बहुलवादी स्कूल, जो वास्तविकता का श्रेणियों में विश्लेषण करता है।
  - **सांख्य : एक द्वैतवादी स्कूल जो चेतना (**' पुरुष ') और पदार्थ (' प्रकृति ') के परस्पर प्रभाव के माध्यम से वास्तविकता की व्याख्या करता है ।
  - **योग:** एक ऐसा स्कूल जो सांख्य तत्वमीमांसा को स्वीकार करता है लेकिन मुक्ति प्राप्त करने के लिए ध्यान और आत्म-अनुशासन के व्यावहारिक तरीकों पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - **मीमांसा (या पूर्व) मीमांसा):** यह विद्यालय वेदों के अनुष्ठानिक भागों ('कर्मकाण्ड') की व्याख्या पर केंद्रित है ।
  - **वेदांत (या उत्तरा मीमांसा):** यह विद्यालय वेदों के बाद के भाग (' ज्ञान-काण्ड ') उपनिषदों की दार्शनिक शिक्षाओं पर केंद्रित है।

नास्तिका (विषमपंथी स्कूल)

- नास्तिक प्रणालियाँ वेदों की दैवीय उत्पत्ति और अचूक प्रमाणिकता को अस्वीकार करती हैं ।

- इन विद्यालयों ने अपने स्वतंत्र धर्मग्रंथ, आध्यात्मिक सिद्धांत और मुक्ति के मार्ग विकसित किये।
- तीन मुख्य विधर्मी स्कूल हैं चार्वाक , जैन धर्म और बौद्ध धर्म।

- **चार्वाक स्कूल:**
  - यह पूर्णतः भौतिकवादी एवं संशयवादी विचारधारा है।
  - यह पुनर्जन्म, कर्म, तथा दैवीय सृष्टिकर्ता की अवधारणाओं को अस्वीकार करता है।
  - यह प्रत्यक्ष अनुभूति को ही ज्ञान का एकमात्र वैध स्रोत मानता है।

- **जैन धर्म:**
  - इस संप्रदाय का प्रचार-प्रसार 24 तीर्थंकरों द्वारा किया गया , जिनमें महावीर अंतिम थे।
  - यह एक बहुलवादी वास्तविकता को प्रस्तुत करता है और अहिंसा ('अहिंसा'), अपरिग्रह (' अनेकान्तवाद ') और अपरिग्रह (' अपरिग्रह ') पर जोर देता है।

- **बौद्ध धर्म:**
  - सिद्धार्थ गौतम बुद्ध द्वारा स्थापित।

- यह दुख को समाप्त करने और निर्वाण प्राप्त करने के लिए 'मध्यम मार्ग' का प्रस्ताव करता है।
- इसके मूल सिद्धांतों में चार आर्य सत्य और स्थायी, अपरिवर्तनीय आत्म (' अनात्मवाद ') की अस्वीकृति शामिल है।

वर्ग	वर्गीकरण का आधार	शामिल स्कूल
आस्तिक (रूढ़िवादी)	वेदों की प्रामाणिकता स्वीकार करें	सांख्य , योग, न्याय , वैशेषिक , मीमांसा , वेदांत
नास्तिक (विषमलिंगी)	वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार करें	चार्वाक , जैन धर्म, बौद्ध धर्म

संबद्ध प्रणालियाँ (जोड़े)	सामान्य फोकस
न्याय - वैशेषिक	तर्क, ज्ञानमीमांसा और आध्यात्मिक यथार्थवाद (श्रेणियाँ/ पदार्थ)
सांख्य - योग	आध्यात्मिक द्वैतवाद (पुरुष-प्रकृति) और मुक्ति का मार्ग (ज्ञान/अभ्यास)
मीमांसा - वेदांत	वेदों की व्याख्या (क्रमशः अनुष्ठानिक और दार्शनिक भाग)

मुख्य परीक्षा तथ्य: परिचय

1. दर्शन ' शब्द का अर्थ है 'दृष्टि' या 'देखना', जो वास्तविकता का प्रत्यक्ष

अनुभव दर्शाता है।

2. भारतीय दर्शन का प्राथमिक उद्देश्य व्यावहारिक है: दुख निवारण (*दुःख-निवृत्ति*)।
3. चार *पुरुषार्थ* (जीवन के उद्देश्य) हैं धर्म (कर्तव्य), अर्थ (धन), काम (इच्छा), और मोक्ष (मुक्ति)।
4. मोक्ष को *परम पुरुषार्थ* माना जाता है ।
5. आस्तिक या नास्तिक के रूप में स्कूलों का वर्गीकरण वैदिक अधिकार की स्वीकृति या अस्वीकृति पर आधारित है, न कि ईश्वर में विश्वास पर।
6. सांख्य और मीमांसा आस्तिक सम्प्रदाय हैं, लेकिन अपने प्रारंभिक स्वरूप में ये नास्तिक (या गैर-आस्तिक) हैं।
7. तीन ऋण (*ऋण-त्रय*) हैं देव-ऋण (देवताओं का ऋण), ऋषि-ऋण (ऋषियों का ऋण), और पितृ-ऋण (पूर्वजों का ऋण)।
8. ये ऋण क्रमशः यज्ञ , ब्रह्मचर्य (अध्ययन) और संतानोत्पत्ति के माध्यम से चुकाए जाते हैं।
9. चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय संप्रदाय कर्म के नियम में विश्वास करते हैं।
10. चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय संप्रदाय मोक्ष को अंतिम लक्ष्य मानते हैं ।
11. वेदों को *श्रुति* (जो सुना जाता है) भी कहा जाता है।
12. स्मृतियों (जैसे मनुस्मृति) को श्रुति से गौण माना जाता है ।
13. भगवद गीता , उपनिषद और ब्रह्म सूत्र मिलकर वेदांत की *प्रस्थानत्रयी बनाते हैं।*
14. भारतीय दर्शन जीवन के निदान (दुख के रूप में) में सामान्यतः निराशावादी है, किन्तु इसके उपचार (मुक्ति संभव है) में आशावादी है।

15. 'दुख की समस्या' अधिकांश स्कूलों के लिए सामान्य प्रारंभिक बिंदु है।
16. अज्ञान (*अविद्या* या *अज्ञान*) को दुख का मूल कारण माना जाता है।
17. एक स्थायी, अपरिवर्तनीय आत्मा (आत्मान) की अवधारणा को सभी आस्तिक संप्रदायों और जैन धर्म द्वारा स्वीकार किया जाता है, लेकिन बौद्ध धर्म और चार्वाक द्वारा इसे अस्वीकार कर दिया जाता है ।
18. छह आस्तिक दर्शनों को *षड्-दर्शन* के नाम से भी जाना जाता है ।
19. नास्तिक विचारधाराओं को 'विषमपंथी' प्रणालियाँ भी कहा जाता है ।
20. *संसार* की अवधारणा जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र को संदर्भित करती है।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

2. वैदिक और उपनिषदिक विश्वदृष्टि

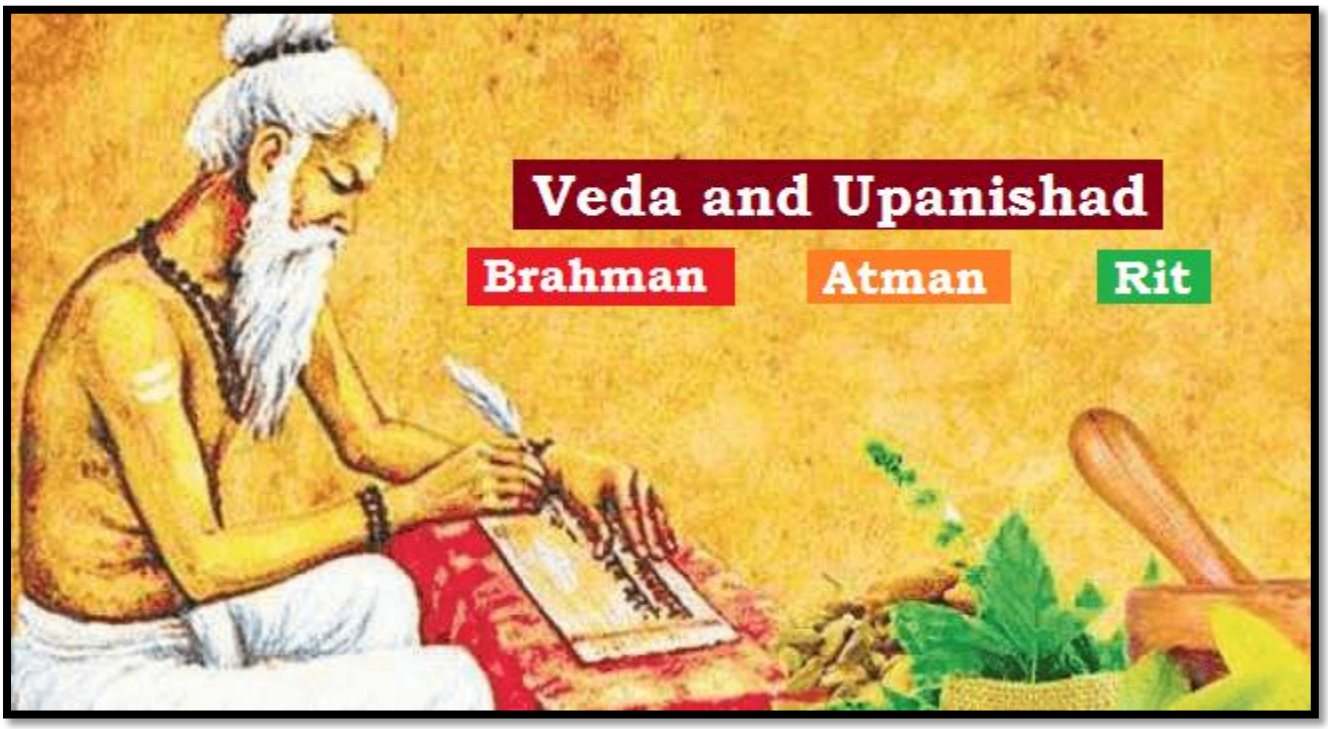

आरटीए : ब्रह्मांडीय व्यवस्था

- ऋत प्रारंभिक वैदिक काल की सबसे मौलिक अवधारणाओं में से एक है।
- यह ब्रह्मांडीय सामंजस्य और व्यवस्था के सार्वभौमिक, अवैयक्तिक और अनुल्लंघनीय सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह नियम अस्तित्व के हर पहलू को नियंत्रित करता है, तारों की गति से लेकर ऋतुओं के परिवर्तन और नदियों के प्रवाह तक।
- यह वह सिद्धांत है जो मानवीय कार्यों के नैतिक क्षेत्र में सत्य, न्याय और धार्मिकता को कायम रखता है।

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year
- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend
- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- इंद्र और वरुण जैसे शक्तिशाली वैदिक देवताओं को भी **ऋत** का संरक्षक और अनुयायी माना जाता था , न कि उसका निर्माता।
- **ऋत** के अनुसार जीवन जीना धार्मिक जीवन का आधार माना जाता था।
- **धर्म** की बाद की अवधारणा ऋत से विकसित हुई और इसमें **ऋत** के कई नैतिक और सामाजिक निहितार्थ शामिल हैं ।

यज्ञ : बलिदान का अनुष्ठान

- प्रारंभिक वैदिक काल में **यज्ञ का** तात्पर्य अनुष्ठानिक अग्नि बलिदान से था।
- **देवताओं** से संवाद करने और उन्हें प्रसन्न करने का मुख्य अनुष्ठान था ।
- अग्नि देवता को **दिव्य** दूत के रूप में देखा जाता था, जो मनुष्यों से प्राप्त प्रसाद को देवताओं के लोक तक ले जाते थे।
- **यज्ञ** का प्राथमिक उद्देश्य ब्रह्मांडीय संतुलन (**ऋत**) बनाए रखना तथा स्वास्थ्य, दीर्घायु और समृद्धि जैसे सांसारिक वरदान प्राप्त करना था।
- उपनिषद काल के बाद , **यज्ञ** की अवधारणा का गहन आंतरिककरण हुआ।
- ध्यान बाह्य भौतिक बलिदान से हटकर आंतरिक प्रतीकात्मक बलिदान पर केंद्रित हो गया।
- यह निःस्वार्थ समर्पण और परिणामों की परवाह न करते हुए की गई किसी भी कार्रवाई का प्रतिनिधित्व करने लगा।
- ज्ञान की खोज को **ज्ञान कहा गया यज्ञ** , आत्म-ज्ञान की अग्नि में अज्ञान का बलिदान।

कर्म का सिद्धांत

- **कर्म** का सिद्धांत नैतिक कारण और प्रभाव का सार्वभौमिक नियम है।
- यह व्यक्तियों के बीच भाग्य, प्रतिभा और परिस्थितियों में असमानताओं के लिए एक तर्कसंगत स्पष्टीकरण प्रदान करता है।
- यह मानता है कि कोई भी कार्य बिना परिणाम के नहीं होता, जिससे ब्रह्मांडीय न्याय सुनिश्चित होता है।
- **संचित कर्म:** यह सभी पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों का विशाल संचय है, जिनका फल मिलना अभी बाकी है।
- **प्रारब्ध कर्म: यह संचित कर्म** का वह विशिष्ट भाग है जो नियत किया गया है तथा जो वर्तमान जीवन में प्रकट होना शुरू हो गया है।
- **आगामी कर्म:** यह वर्तमान जीवन में किए जा रहे नए कार्यों को संदर्भित करता है, जिनके परिणाम भविष्य में संचित कर्म में जोड़े जाएंगे।

ब्रह्म और आत्मा: परम एकता

- **ब्रह्म** उपनिषदों की केंद्रीय अवधारणा है, जो ब्रह्मांड की अंतिम, सर्वोच्च और अपरिवर्तनीय वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता है।
- इसे एकल, सार्वभौमिक चेतना

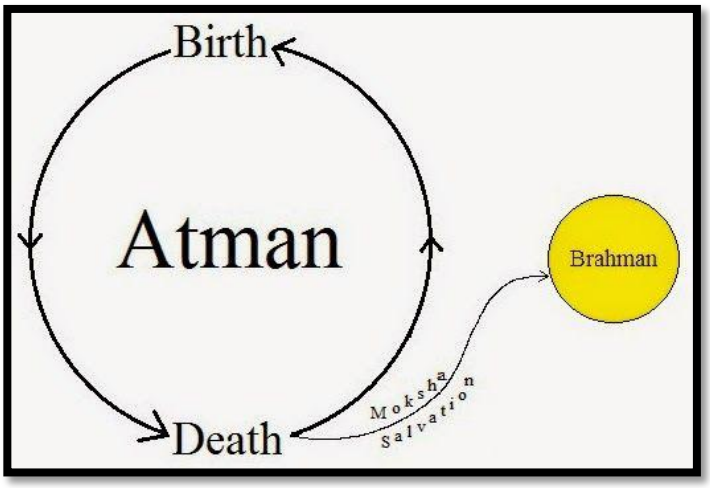

के रूप में वर्णित किया गया है जो समस्त अस्तित्व का स्रोत और आधार है।

- **आत्मा** व्यक्तिगत स्व या आत्मा है, एक जीवित प्राणी का अंतरतम सार, जो शुद्ध चेतना है।
- उपनिषदों की मूल शिक्षा **आत्मा** और **ब्रह्म का मौलिक अद्वैत (अद्वैत**) है ।
- यह पहचान अज्ञान (**अविद्या**) से अस्पष्ट हो जाती है, जिसके कारण व्यक्ति स्वयं को अलग और सीमित समझने लगता है।
- यह गहन एकता उपनिषदों में पाए जाने वाले महावाक्यों **में शक्तिशाली रूप से व्यक्त की गई है।**
- उदाहरणों में शामिल हैं " **अहम् ब्रह्मास्मि** "(मैं ब्रह्म हूं) और" **तत् त्वम् असि** (वह तू है)।
- ये कथन मात्र दार्शनिक कथन नहीं हैं, बल्कि इस एकता का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए ध्यान के संकेत हैं।

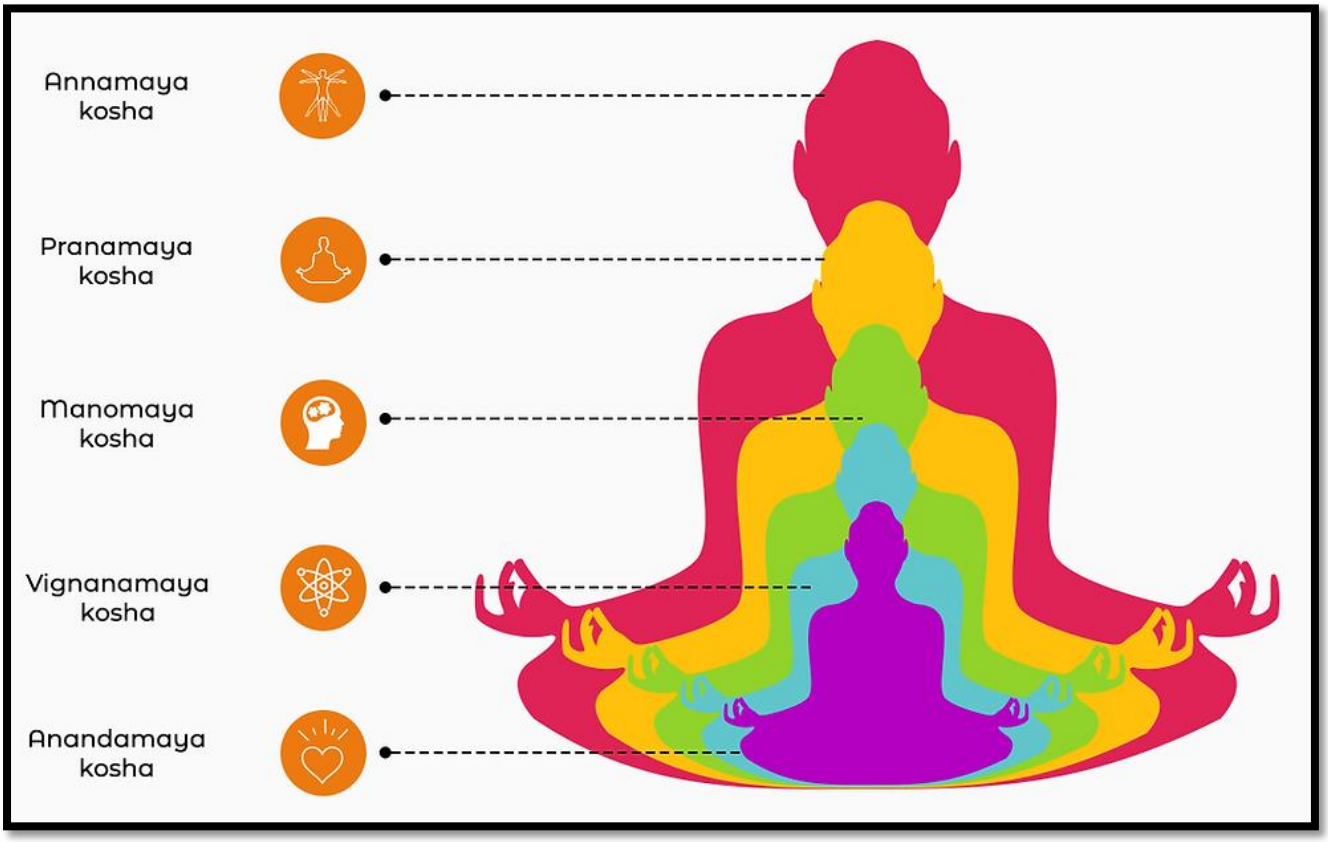

पंचकोश : पांच कोश

- उपनिषदों में **आत्मा को पांच परतों या आवरणों (कोशों)** में छुपा हुआ बताया गया है।
- ये आवरण अज्ञान की परतें हैं जो अ-स्व के साथ एक झूठी पहचान बनाते हैं।
- मुक्ति के मार्ग में इन पांच परतों में अंतर करने और उनसे परे जाने की प्रक्रिया शामिल है।
- **अन्नमय कोश : भोजन से बना** सबसे बाहरी आवरण , जो भौतिक शरीर का प्रतिनिधित्व करता है।

- **प्राणमय कोश : महत्वपूर्ण ऊर्जा (प्राण)** का आवरण जो भौतिक शरीर को जीवंत करता है।
- **मनोमय कोश :** मन का आवरण, जिसमें विचार, भावनाएं और संवेदी धारणाएं शामिल हैं।
- **विज्ञानमय कोश :** बुद्धि और ज्ञान का आवरण, जो विवेक, निर्णय और अहं-चेतना के लिए जिम्मेदार है।
- **आनंदमय कोश : आनंद का अंतरतम आवरण, जिसे गहरी नींद में अनुभव किया जाता है, जो आत्मा को** ढकने वाला अंतिम आवरण है ।

चेतना की अवस्थाएँ (अवस्था)

- उपनिषद चेतना की चार अवस्थाओं के माध्यम से संपूर्ण मानव अनुभव का विश्लेषण करते हैं।

1. जाग्रत अवस्था:

- इस अवस्था में चेतना बाहर की ओर निर्देशित होती है तथा इन्द्रियों के माध्यम से स्थूल, भौतिक संसार का अनुभव करती है।
- आत्मा की पहचान भौतिक शरीर से होती है और इसे **वैश्वानर के नाम से जाना जाता है** ।

2. स्वप्न (सपने देखने की अवस्था):

- यहाँ, चेतना भीतर की ओर निर्देशित होती है, तथा मन के संस्कारों से निर्मित सूक्ष्म जगत का अनुभव करती है।
- आत्मा की पहचान सूक्ष्म शरीर से होती है और इसे **तैजस के नाम से जाना जाता है** ।

- **3. सुषुप्ति (गहरी नींद की अवस्था):**
  - यह अविभेदित चेतना की अवस्था है जहां मन और इंद्रियां विश्राम में होती हैं।
  - वहाँ कोई वस्तु या स्वप्न नहीं है, केवल आनंदमय अज्ञान की स्थिति है, जहाँ आत्मा अस्थायी रूप से एकीकृत होती है और जिसे **प्रज्ञा के रूप में जाना जाता है** ।

- **4. तुरीय (चौथा):**
  - **तुरीय** कोई अन्य क्रमिक अवस्था नहीं है, बल्कि शुद्ध, अद्वैत चेतना ही है।
  - **आत्मा** की अपरिवर्तनीय वास्तविकता है जो अन्य तीन अवस्थाओं का आधार है और उनकी साक्षी है।
  - यह मौन, शांति और आत्मज्ञान की अवस्था है, जो अंतिम लक्ष्य है।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

UGC NET / JRF / A. Professor / CUET

हिंदी English माध्यम उपलब्ध

Paper 1 & All Subject Available

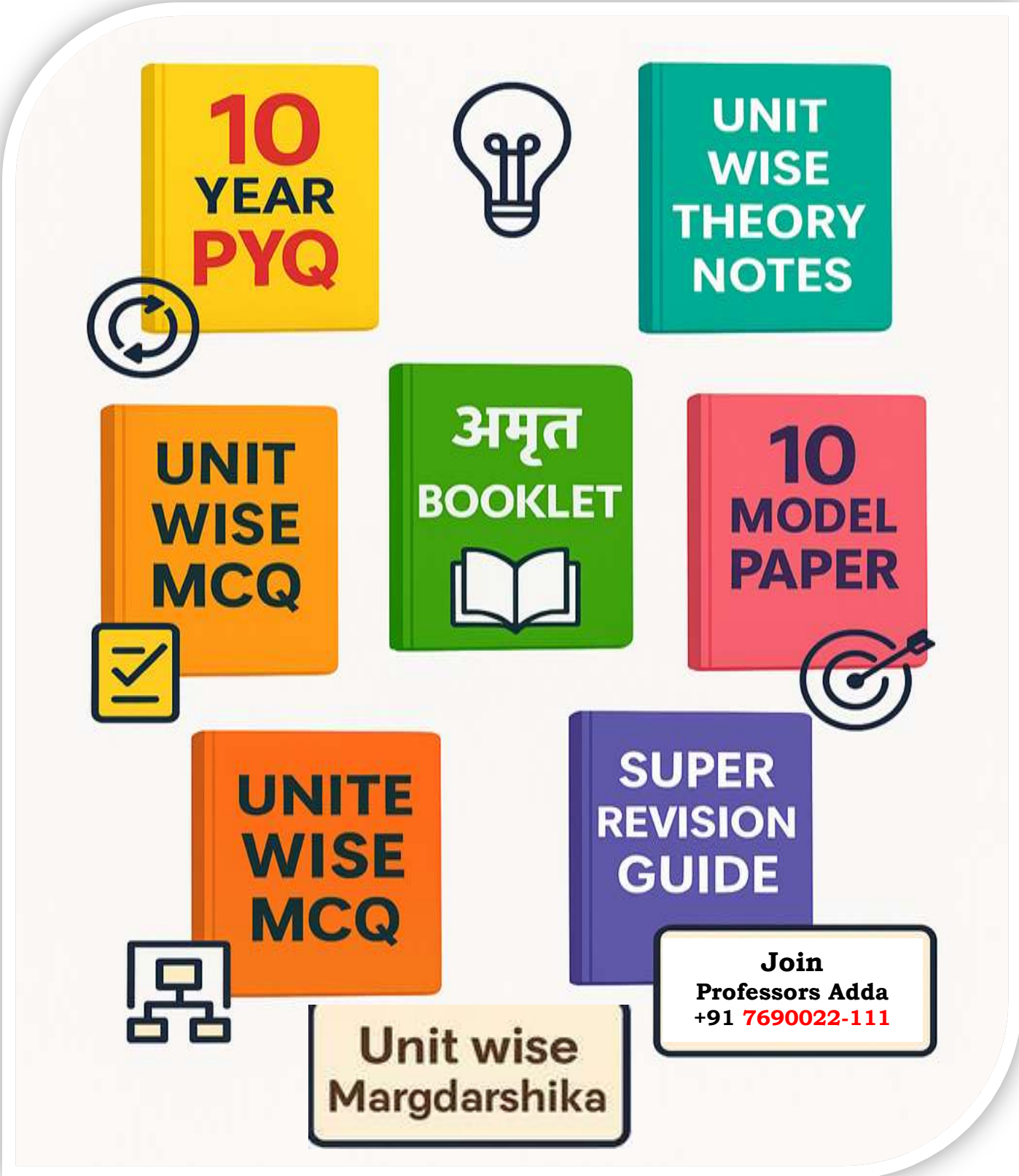

All Subject's Complete Study Material KIT available. Professor Adda

Call WhatsApp Now +91 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA

UGC NET / JRF / A. Professor / CUET

हिंदी English माध्यम उपलब्ध

Paper 1 & All Subject Available

POLITICAL SCIENCE
SOCIOLOGY
PHILOSOPHY
PUBLIC ADMINISTRATION
PHYSICAL EDUCATION
English
हिन्दी
COMMERCE
ECONOMICS
HISTORY
GEOGRAPHY
EDUCATION
संस्कृत
HOME SCIENCE
SOCIAL WORK
YOGA
COMPUTER SCIENCE
MANAGEMENT
OTAL
EDUCATION
HOME SCIENCE
OTHER ALL
COMPUTER SCIENCE
MANAGEMENT

All Subject's Complete Study Material KIT available. Professor Adda
Call WhatsApp Now +91 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

म्यान (कोष)	विवरण	के साथ जुड़े
अन्नमय कोष	भोजन से बना भौतिक आवरण	स्थूल शरीर
प्राणमय कोष	महत्वपूर्ण ऊर्जा म्यान	सांस, शारीरिक कार्य
मनोमय कोष	मानसिक आवरण	मन, भावनाएँ, इच्छाएँ
विज्ञानमय कोष	बौद्धिक आवरण	बुद्धि, विवेक, अहंकार
आनंदमय कोष	आनंद म्यान	कारण शरीर, गहरी नींद

चेतना की अवस्था	भोक्ता	अनुभव की वस्तु
जाग्रत (जागृति)	विश्व	स्थूल, बाह्य वस्तुएँ
स्वप्न (सपने देखना)	तैजासा	सूक्ष्म, आंतरिक वस्तुएं (मानसिक छापें)
सुषुप्ति (गहरी नींद)	प्रज्ञा	अविभेदित चेतना (आनंद)
तुरीय (चौथा)	आत्मन	अद्वैत, शुद्ध चेतना (कोई विषय-वस्तु द्वैत नहीं)

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

परीक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य: वेद और उपनिषद

1. ऋग्वेद चारों वेदों में सबसे प्राचीन है ।
2. वेद चार भागों में विभाजित हैं: संहिता , ब्राह्मण , आरण्यक और उपनिषद।
3. उपनिषदों को *वेदांत भी कहा जाता है*, जिसका अर्थ है 'वेदों का अंत'।
4. प्रसिद्ध *पुरुष* ब्रह्माण्डीय यज्ञ का वर्णन करने वाला *सूक्त* ऋग्वेद में है ।
5. नासदिया ऋग्वेद का *सूक्त* (सृष्टि का स्तोत्र) ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में गहन संदेह व्यक्त करता है।
6. *ऋत* एक पूर्व-ईश्वरवादी अवधारणा है, जो देवताओं से ऊपर एक अवैयक्तिक कानून है।
7. भगवान *वरुण को* ऋत का संरक्षक माना जाता है ।
8. 'ब्रह्म' शब्द का मूल अर्थ 'प्रार्थना' या 'पवित्र वाणी' था, जो बाद में विकसित होकर परम वास्तविकता के रूप में सामने आया।
9. उपनिषदों में मोक्ष का मार्ग *ज्ञान बताया गया है। मार्ग* (ज्ञान का मार्ग).
10. इस मार्ग की विधियाँ हैं *श्रवण* (सत्य सुनना), *मनन* (तर्कसंगत चिंतन), और *निदिध्यासन* (ध्यानपूर्ण चिंतन)।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

11. चार महावाक्य विभिन्न उपनिषदों से हैं और उनकी मूल शिक्षा का सारांश प्रस्तुत करते हैं।
12. " प्रज्ञानं ब्रह्म" (चेतना ही ब्रह्म है) ऐतरेय उपनिषद से है।
13. " अहम् ब्रह्मास्मि "(मैं ब्रह्म हूं) बृहदारण्यक उपनिषद से है।
14. " तत् त्वम् असि (वह तुम हो) छान्दोग्य उपनिषद से है।
15. " अयम आत्मा ब्रह्म" (यह आत्मा ब्रह्म है) माण्डूक्य उपनिषद से है।
16. पंचकोश की अवधारणा तैत्तिरीय उपनिषद में विस्तार से दी गई है ।
17. माण्डूक्य उपनिषद में चेतना की चार अवस्थाओं का विश्लेषण किया गया है ।
18. कर्म का सिद्धांत पहली बार व्यवस्थित रूप से उपनिषदों में प्रकट होता है।
19. उपनिषद ब्राह्मणों के कर्मकाण्ड (*कर्मकाण्ड*) से दर्शनशास्त्र (*ज्ञानकाण्ड*) *की ओर बदलाव का प्रतीक हैं।*
20. स्वयं की प्रकृति के बारे में नचिकेता और यम के बीच प्रसिद्ध संवाद कठोपनिषद में है ।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

अमृत बुकलेट

PROFESSORS ADDA

यह क्या है, क्यों पढ़ें इसे?

- **AMRIT Booklet** को विषय की सभी प्रमुख पुस्तको से परीक्षा उपयोगी सार निकाल एक जगह **PYQ** पैटर्न पर बनाया गया है । आपको बुक्स नही पढ़नी अब**.**
- यह सिर्फ एक सामान्य बुकलेट नहीं**,** बल्कि एक **Top-Level rstudy Tool** है**,** जिसे विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है जो तेज़ रिवीजन**, Exam-Time Recall** और **Concept Clarity** चाहते हैं।
- इसमें आपको मिलेगा हर जरूरी टॉपिक का "अमृत निचोड़" — यानी वही बातें जो परीक्षा में बार-बार पूछी जाती हैं।
- यह **Booklet** हर विषय के **Core Concepts, Keywords, Thinkers, Definitions** और **Chronology** को एक जगह समेटती है — और वो भी एकदम **crisp** तरीके से प्रश्न और उत्तर शैली मे ।

🧠 लाभ और विशेषताएँ:

- ✓ Super Quick Revision Tool
- ✓ Exam Time Confidence Booster
- ✓ High Retention Format –
- ✓ 100% Exam-Oriented – No Extra, No Fluff

ALL INDIA RANK

💡 कैसे करें सर्वोत्तम उपयोग?

✅ पहले गाइड से टॉपिक का अमृत पेज पढ़ें
✅ Concepts के साथ-साथ Keywords को याद करें
✅ उसी दिन उस टॉपिक से MCQs हल करें
✅ परीक्षा से पहले सिर्फ इसी से रिवीजन करें — Time Saving, Score Boosting

🎁 Bonus Insides

🎯 यह किनके लिए है?

- ✅ **NET / SET/ PGT**
- ✅ **Assistant Professor Candidates**
- ✅ जिन्हे समय कम है लेकिन **Result** चाहिए **Strong** और **SYLLABUS** भी पूरा हो

यह **Booklet** उन सभी के लिए है जो सिर्फ पढ़ना नहीं**,** "सही पढ़ना" चाहते हैं।

🔑 क्या-क्या मिलेगा इसमें?

- **One Page One Topic Format –** हर पेज पर एक पूरा टॉपिक क्लियर
- **2025** के नवीनतम बदलावों के अनुसार अपडेटेड

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 अभी बुक करें | DM करें | WhatsApp करें | Link से डाउनलोड करें

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

दर्शनशास्त्र वनलाइनर

1. प्रश्न: अपनी पुस्तक द रिपब्लिक में, किस यूनानी दार्शनिक ने 'आकारों के सिद्धांत' (Theory of Forms) का प्रस्ताव दिया, जिसमें पूर्ण विचारों की दुनिया के लिए तर्क दिया गया?
   उत्तर: प्लेटो।
2. प्रश्न: प्रसिद्ध दार्शनिक कथन "Cogito, ergo sum" ("मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ") किस फ्रांसीसी तर्कवादी की पुस्तक डिस्कोर्स ऑन द मेथड (1637) में पाया जाता है?
   उत्तर: रेने देकार्त।
3. प्रश्न: किस वर्ष में इम्मैनुएल कांट ने अपनी युगांतरी कृति क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन प्रकाशित की, जिसने तर्कवाद और अनुभववाद को संश्लेषित करने की मांग की?
   उत्तर: 1781.
4. प्रश्न: 'प्रतीत्यसमुत्पाद' (आश्रित उत्पत्ति) की अवधारणा किस भारतीय दार्शनिक परंपरा का एक केंद्रीय सिद्धांत है, जिसकी स्थापना सिद्धार्थ गौतम ने की थी?
   उत्तर: बौद्ध धर्म।
5. प्रश्न: गौतम द्वारा स्थापित भारतीय दर्शन का 'न्याय' स्कूल, मुख्य रूप से दर्शन की किस शाखा से संबंधित है?
   उत्तर: तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा।
6. प्रश्न: प्रसिद्ध कथन "अस्तित्व सार से पहले आता है" अस्तित्ववाद का एक केंद्रीय सिद्धांत है और जीन-पॉल सार्त्र की 1943 की किस पुस्तक का एक प्रमुख विषय है?
   उत्तर: बीइंग एंड नथिंगनेस।
7. प्रश्न: किस ब्रिटिश अनुभववादी ने अपनी 1690 की पुस्तक एन एसे कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग में मन को 'टेबुला रासा' (कोरी स्लेट) के रूप में प्रस्तावित

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

किया?

उत्तर: जॉन लॉक।

8. प्रश्न: 'अद्वैत' (गैर-द्वैतवाद) का सिद्धांत, जो यह मानता है कि ब्रह्म ही एकमात्र वास्तविकता है और दुनिया 'माया' है, किस 8वीं सदी के भारतीय दार्शनिक द्वारा प्रतिपादित किया गया था?

उत्तर: शंकर (आदि शंकराचार्य)।

9. प्रश्न: 'निरपेक्ष आदेश' (Categorical Imperative), जो कर्तव्यमूलक नैतिकता में एक केंद्रीय अवधारणा है, किस जर्मन दार्शनिक द्वारा तैयार किया गया था?

उत्तर: इम्मैनुएल कांट।

10. प्रश्न: अपनी पुस्तक लेविथान (1651) में, किस अंग्रेजी दार्शनिक ने तर्क दिया कि प्रकृति की स्थिति में जीवन "एकान्त, दीन, घिनौना, पाशविक और छोटा" है?

उत्तर: थॉमस हॉब्स।

11. प्रश्न: 'अनेकांतवाद' (अनेकपक्षीयता) का दार्शनिक सिद्धांत किस भारतीय दार्शनिक स्कूल का एक मौलिक सिद्धांत है?

उत्तर: जैन धर्म।

12. प्रश्न: ट्रैक्टेटस लॉजिको-फिलोसॉफिकस (1921) किसने लिखा, जिसमें यह तर्क दिया गया कि दर्शन का उद्देश्य विचारों का तार्किक स्पष्टीकरण है?

उत्तर: लुडविग विट्गेंस्टाइन।

13. प्रश्न: कपिल द्वारा स्थापित 'सांख्य' स्कूल, किन दो अंतिम वास्तविकताओं की अंतःक्रिया पर आधारित एक द्वैतवादी दर्शन है?

उत्तर: पुरुष (चेतना) और प्रकृति (पदार्थ)।

14. प्रश्न: 'उबेरमेन्श' (अतिमानव) की अवधारणा किस 19वीं सदी के जर्मन दार्शनिक ने अपनी पुस्तक दस स्पोक जरथुस्त्र में पेश की थी?

उत्तर: फ्रेडरिक नीत्शे।

15. प्रश्न: 'वैशेषिक' स्कूल का संस्थापक किसे माना जाता है, जो अपने परमाणु सिद्धांत (परमाणुवाद) के लिए जाना जाता है?

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

उत्तर: कणाद।

16. प्रश्न: थीसिस, एंटी-थीसिस और सिंथेसिस की द्वंद्वात्मक पद्धति सबसे प्रसिद्ध रूप से किस जर्मन आदर्शवादी दार्शनिक से जुड़ी है?

उत्तर: जी.डब्ल्यू.एफ. हेगेल।

17. प्रश्न: भारतीय दर्शन का 'चार्वाक' या 'लोकायत' स्कूल किस दार्शनिक स्थिति के प्रति अपनी कट्टर निष्ठा के लिए जाना जाता है?

उत्तर: भौतिकवाद।

18. प्रश्न: 20वीं सदी के घटना-क्रिया-विज्ञान और अस्तित्ववाद का एक foundational ग्रंथ, बीइंग एंड टाइम (1927) किसने लिखा?

उत्तर: मार्टिन हाइडेगर।

19. प्रश्न: वेदांत के 'विशिष्टाद्वैत' (योग्य गैर-द्वैतवाद) स्कूल का समर्थन किस 11वीं सदी के दार्शनिक ने किया था?

उत्तर: रामानुज।

20. प्रश्न: 'एस्से इस्ट पर्सिपी' ("होना प्रत्यक्ष होना है") का सिद्धांत किस आयरिश दार्शनिक के व्यक्तिपरक आदर्शवाद की आधारशिला है?

उत्तर: जॉर्ज बर्कले।

21. प्रश्न: योग दर्शन का एक foundational ग्रंथ, योग सूत्र, का श्रेय किस प्राचीन ऋषि को दिया जाता है?

उत्तर: पतंजलि।

22. प्रश्न: किस दार्शनिक ने अपनी ए ट्रीटाइज़ ऑफ ह्यूमन नेचर (1739) में प्रसिद्ध रूप से 'आगमन की समस्या' (problem of induction) को व्यक्त किया?

उत्तर: डेविड ह्यूम।

23. प्रश्न: 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष' की अवधारणा किस प्रमुख दार्शनिक परंपरा में चार 'पुरुषार्थों' (मानव जीवन के उद्देश्य) का प्रतिनिधित्व करती है?

उत्तर: हिंदू धर्म (भारतीय दर्शन)।

24. प्रश्न: 'सत्यापन का सिद्धांत', जो तार्किक प्रत्यक्षवाद का एक प्रमुख सिद्धांत है, का समर्थन 20वीं सदी के किस शुरुआती समूह के दार्शनिकों ने किया था?

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

उत्तर: वियना सर्कल।

25. प्रश्न: वेदांत के 'द्वैत' (द्वैतवाद) स्कूल, जो ईश्वर और व्यक्तिगत आत्माओं के बीच एक सख्त भेद स्थापित करता है, की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?

उत्तर: मध्वाचार्य।

26. प्रश्न: अपनी पुस्तक यूटिलिटेरियनिज्म (1863) में, किसने नैतिकता की नींव के रूप में "सबसे बड़ी खुशी के सिद्धांत" के लिए तर्क दिया?

उत्तर: जॉन स्टुअर्ट मिल।

27. प्रश्न: 'अनात्मवाद' (नो-सेल्फ या नो-सोल) की अवधारणा किस दार्शनिक प्रणाली का एक केंद्रीय सिद्धांत है?

उत्तर: बौद्ध धर्म।

28. प्रश्न: प्लेटो का कौन सा छात्र, तर्क पर अपने व्यवस्थित कार्यों के लिए जाना जाता है, जिसे ऑर्गेनन शीर्षक के तहत एकत्र किया गया है?

उत्तर: अरस्तू।

29. प्रश्न: जैमिनी द्वारा स्थापित 'पूर्व मीमांसा' स्कूल, मुख्य रूप से किन पवित्र ग्रंथों की व्याख्या पर केंद्रित है?

उत्तर: वेद (विशेषकर संहिता और ब्राह्मण)।

30. प्रश्न: 'सोशल कॉन्ट्रैक्ट' सिद्धांत, जैसा कि उसी नाम की 1762 की पुस्तक में उल्लिखित है, किस जिनेवा में जन्मे दार्शनिक द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: जीन-जैक्स रूसो।

31. प्रश्न: जैन सिद्धांत 'स्याद्वाद' प्रत्येक प्रस्ताव की सशर्त प्रकृति को इंगित करने के लिए "स्याद्" (शायद/एक तरह से) उपसर्ग लगाने की सिफारिश करता है। इस सिद्धांत को अक्सर क्या कहा जाता है?

उत्तर: सशर्त विधेयन का सिद्धांत।

32. प्रश्न: फेनोमेनोलॉजी ऑफ स्पिरिट (1807) किसने लिखी, जो चेतना के पूर्ण ज्ञान तक के विकास का विवरण देती है?

उत्तर: जी.डब्ल्यू.एफ. हेगेल।

33. प्रश्न: शब्दों के अर्थ को समझाने के लिए 'पारिवारिक समानता' का विचार किस

विचारक के बाद के दर्शन में एक प्रमुख अवधारणा थी?

उत्तर: लुडविग विट्गेंस्टाइन।

34. प्रश्न: 'इंटीग्रल योग' और 'सुपरमाइंड' की अवधारणा किस 20वीं सदी के भारतीय विचारक के दर्शन के केंद्र में है?

उत्तर: श्री अरबिंदो।

35. प्रश्न: मिलेटस के किस पूर्व-सुकराती दार्शनिक को अक्सर प्राकृतिक स्पष्टीकरण की तलाश के लिए पश्चिमी परंपरा में पहले दार्शनिक के रूप में सम्मानित किया जाता है?

उत्तर: थेल्स।

36. प्रश्न: भारतीय ज्ञानमीमांसा में, 'प्रमाण' ज्ञान के वैध साधनों को संदर्भित करता है। न्याय स्कूल ऐसे कितने साधनों को स्वीकार करता है?

उत्तर: चार (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द)।

37. प्रश्न: पुस्तक फियर एंड ट्रेम्बलिंग (1843), जो अब्राहम और इसहाक की कहानी की पड़ताल करती है, "अस्तित्ववाद के पिता" की एक प्रमुख कृति है?

उत्तर: सोरेन कीर्केगार्ड।

38. प्रश्न: 'लॉजिकल एटमिज्म' का सिद्धांत बर्ट्रेंड रसेल और उनके किस प्रसिद्ध छात्र द्वारा विकसित किया गया था?

उत्तर: लुडविग विट्गेंस्टाइन।

39. प्रश्न: 'आर्य अष्टांगिक मार्ग' की अवधारणा किस दर्शन में 'दुःख' को समाप्त करने का व्यावहारिक साधन है?

उत्तर: बौद्ध धर्म।

40. प्रश्न: द सेकेंड सेक्स (1949) की लेखिका कौन हैं, जो द्वितीय-लहर नारीवाद का एक foundational ग्रंथ है?

उत्तर: सिमोन डी ब्यूवोइर।

41. प्रश्न: अपनी पॉलिटिक्स में, किस दार्शनिक ने प्रसिद्ध रूप से मनुष्य को "राजनीतिक जानवर" (जून पोलिटिकॉन) के रूप में वर्णित किया?

उत्तर: अरस्तू।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

42. प्रश्न: 'शून्यवाद' का सिद्धांत महायान बौद्ध धर्म के माध्यमिक स्कूल का केंद्रीय दर्शन है, जिसकी स्थापना किसके द्वारा की गई थी?

उत्तर: नागार्जुन।

43. प्रश्न: 'व्यावहारिक सूत्र' (Pragmatic Maxim), जो व्यावहारिकता का एक मूल सिद्धांत है, पहली बार 1870 के दशक में किस अमेरिकी दार्शनिक द्वारा तैयार किया गया था?

उत्तर: चार्ल्स सैंडर्स पियर्स।

44. प्रश्न: 'शक्ति की इच्छा' (Wille zur Macht) किस जर्मन विचारक के दर्शन में एक प्रमुख अवधारणा है?

उत्तर: फ्रेडरिक नीत्शे।

45. प्रश्न: वेदांत स्कूल के लिए एक foundational ग्रंथ, ब्रह्म सूत्र, का श्रेय किस ऋषि को दिया जाता है?

उत्तर: बादरायण।

46. प्रश्न: 'विखंडन' (Deconstruction) महत्वपूर्ण विश्लेषण की एक विधि है जो किस फ्रांसीसी दार्शनिक के साथ सबसे निकटता से जुड़ी है?

उत्तर: जैक्स डेरिडा।

47. प्रश्न: 'सुकराती पद्धति', सहकारी तर्कपूर्ण संवाद का एक रूप, का नाम सुकरात के नाम पर रखा गया है, जिनका दर्शन मुख्य रूप से किसके लेखन के माध्यम से जाना जाता है?

उत्तर: प्लेटो।

48. प्रश्न: कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने किस वर्ष कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो प्रकाशित किया?

उत्तर: 1848.

49. प्रश्न: यह विचार कि सभी ज्ञान इंद्रिय-अनुभव से प्राप्त होता है, किस दार्शनिक दृष्टिकोण का केंद्रीय सिद्धांत है?

उत्तर: अनुभववाद।

50. प्रश्न: 'डाज़ाइन' (वहाँ-होना) की अवधारणा, जैसा कि मनुष्यों द्वारा अनुभव की

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

जाने वाली होने की एक विशिष्ट विधा है, किस दार्शनिक के काम के केंद्र में है?

उत्तर: मार्टिन हाइडेगर।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

यूजीसी नेट दर्शनशास्त्र - इकाई 1: शास्त्रीय भारतीय ज्ञानमीमांसा और तत्वमीमांसा - MCQs

प्रमाण (मान्य ज्ञान के स्रोत) पर चार्वाक स्कूल के रुख का सटीक वर्णन करता है ?

A) चार्वाक प्रत्यक्ष (धारणा), अनुमान (अनुमान) और शब्द (मौखिक साक्ष्य) को वैध प्रमाण मानता है ।
B) चार्वाक केवल प्रत्यक्ष षष्ठ (धारणा) को ही वैध प्रमाण मानता है तथा अनुमान और शब्द की वैध्यता की आलोचना करता है।
C) चार्वाक शब्द (मौखिक साक्ष्य) को प्राथमिक महत्व देता है, विशेष रूप से वेदों को, तथा प्रत्यक्ष षष्ठ को द्वितीयक स्रोत के रूप में स्वीकार करता है।
D) चार्वाक प्रत्यक्ष और अनुमान को स्वीकार करता है लेकिन शब्द को अस्वीकार करता है, यह तर्क देते हुए कि मौखिक गवाही अविश्वसनीय है।
E) चार्वाक उपमान (तुलना) को प्राथमिक प्रमाण मानते हैं , तथा उससे अन्य प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति करते हैं।

उत्तर: b) चार्वाक केवल प्रत्यक्ष षष्ठ (धारणा) को ही वैध प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है तथा अनुमान और शब्द की वैधता की आलोचना करता है।

स्पष्टीकरण:

- **प्रत्यक्ष ष एकमात्र प्रमा णः चार्वाक** (या लोकायत) संप्रदाय अपने कट्टरपंथी अनुभववाद और भौतिकवाद के लिए जाना जाता है। उनका मानना है कि अनुभूति ही ज्ञान का एकमात्र विश्वसनीय स्रोत है क्योंकि यह सीधे वस्तुओं को चेतना के सामने प्रस्तुत करता है।
- **अनुमान की आलोचना:** चार्वाक तर्क देते हैं कि अनुमान अविश्वसनीय है क्योंकि यह व्याप्ति (अपरिवर्तनीय संयोग) पर निर्भर करता है, जिसे कभी भी सार्वभौमिक रूप से स्थापित नहीं किया जा सकता है। हम धुएं और आग के उदाहरणों को एक साथ देख सकते हैं, लेकिन हम सभी उदाहरणों को यह सुनिश्चित करने के लिए नहीं देख सकते हैं कि धुएं के साथ हमेशा आग होती है। हमारे लिए अज्ञात अपवाद हो सकते हैं।
- **शब्द की आलोचना:** वेदों सहित मौखिक गवाही को भी अस्वीकार किया जाता है। चार्वाक तर्क देते हैं कि गवाही की विश्वसनीयता वक्ता की विश्वसनीयता पर निर्भर करती है, जिसे स्वयं धारणा के माध्यम से स्थापित करने की आवश्यकता होती है । वे विशेष रूप से शास्त्रीय अधिकार की आलोचना करते हैं, इसे शोषण का साधन मानते हैं।
- **चेतना एक उपघटना के रूप में:** अपने भौतिकवाद के अनुरूप, चार्वाक मानते हैं कि चेतना एक अलग पदार्थ नहीं है, बल्कि पदार्थ का एक उभरता हुआ गुण (उपघटना) है जब इसे एक

विशिष्ट तरीके से (यानी, भौतिक शरीर) व्यवस्थित किया जाता है। शरीर के विघटन के साथ इसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

- **आध्यात्मिक सत्ताओं की अस्वीकृति:** परिणामस्वरूप, चार्वाक ईश्वर, आत्मा, परलोक, कर्म और अन्य आध्यात्मिक अवधारणाओं के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं जिन्हें अवधारणात्मक रूप से सत्यापित नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 2. सूची I (जैन तत्वमीमांसा) की अवधारणाओं का सूची II में उनके सही विवरण से मिलान करें।

सूची I (संकल्पना)	सूची II (विवरण)
A. द्रव्य	i. यह सिद्धांत कि वास्तविकता बहुआयामी है और इसे कई दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है
B. अनेकांतवाद	ii. वास्तविकता के बारे में सभी निर्णयों की सशर्त या सापेक्ष प्रकृति
C. स्याद्वाद	iii. परम पदार्थ जिसमें गुण (गु ṇ ए) और गुण (पर्याय) होते हैं
D. जीव	iv. अचेतन या भौतिक पदार्थों की श्रेणी
E. अजीवा	v. चेतन, संवेदनशील आत्मा या जीवन सिद्धांत

सही मिलान चुनें:
A) A-iii, B-i, C-ii, D-v, E-iv
B) A-i, B-iii, C-ii, D-iv, E-v
C) A-iii, B-ii, C-v, D-i, E-iv
D) A-i, B-v, C-ii, D-iii, E-iv
E) A-iii, B-i, C-iv, D-v, E-ii

उत्तर: a) A-iii, B-i, C-ii, D-v, E-iv

स्पष्टीकरण:

- **A. द्रव्य (पदार्थ) - iii:** जैन धर्म में द्रव्य उन मूलभूत पदार्थों को कहते हैं जो वास्तविकता का निर्माण करते हैं। प्रत्येक द्रव्य में अस्तित्व (सत्) की विशेषता होती है, उसमें गुण (गुण) होते हैं , तथा उसमें परिवर्तन या विधाएँ (पर्याय) होती हैं। उदाहरणों में जीव (आत्मा), पुद्गल (पदार्थ), धर्म (गति का माध्यम), अधर्म (विश्राम का माध्यम), आकाश (स्थान), और काल (समय) शामिल हैं।
- **B. अनेकांतवाद (वास्तविकता की बहुलता) - i:** यह एक मुख्य जैन आध्यात्मिक सिद्धांत है जो यह दावा करता है कि वास्तविकता जटिल और बहुआयामी है। सत्य और वास्तविकता को

अलग-अलग दृष्टिकोणों से अलग-अलग तरीके से देखा जाता है, और कोई भी एक दृष्टिकोण सत्य की संपूर्णता को नहीं पकड़ सकता है। यह इस विचार पर जोर देता है कि किसी वस्तु में अनंत गुण होते हैं।

- **C. स्याद्वाद (सशर्त पूर्वानुमान का सिद्धांत) - ii:** यह अनेकांतवाद का ज्ञानमीमांसीय और तार्किक परिणाम है। यह बताता है कि सभी निर्णय सशर्त और सापेक्ष हैं, जिन्हें उपसर्ग "स्यात्" (जिसका अर्थ है "शायद" या "किसी मामले में") के साथ व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, "स्यात् अस्ति" (कुछ मामलों में, यह है)। यह किसी भी एक कथन की पक्षपातपूर्णता को स्वीकार करता है। इसमें आम तौर पर सात गुना पूर्वानुमान (सप्तभा ङ्गी-नय) शामिल होता है ।
- **D. जीव (आत्मा/चेतना) - v:** जीव जैन धर्म में चेतन, संवेदनशील सिद्धांत या आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। जीव संख्या में अनंत हैं, आंतरिक रूप से शुद्ध हैं, और उनमें चेतना (चेतना), आनंद (सुख) और ऊर्जा (वीर्य) है। वे अज्ञानता और वासनाओं के कारण कर्म से बंधे हैं।
- **E. अजीव (अचेतन/अचेतन) - iv:** अजीव में सभी अचेतन पदार्थ शामिल हैं। इनमें पुद्गल (पदार्थ, जो परमाणु है और इंद्रियों की वस्तुओं का निर्माण कर सकता है), धर्म (गति का सिद्धांत), अधर्म (विश्राम का सिद्धांत), आकाश (स्थान), और काल (समय) शामिल हैं। ये, जीव के साथ मिलकर वास्तविकता की मूलभूत श्रेणियाँ बनाते हैं।

प्रश्न 3. अभिकथन (A): न्याय दर्शन के अनुसार, अनुमान (अनुमान) एक वैध और स्वतंत्र प्रमाण है , जो प्रत्यक्ष प्रमाण (धारणा) से अलग है ।
कारण (R): अनुमान में चिह्न (लिंग/हेतु) को समझने और अनुमानित वस्तु (साध्य) के साथ उसकी अपरिवर्तनीय संगति (व्याप्ति) को याद रखने की एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया शामिल है, जिससे अप्राप्य वस्तु का ज्ञान होता है।

कोड:
a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(c) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।
e) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

उत्तर: a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A):** न्याय दर्शनशास्त्र अपने तर्क और ज्ञानमीमांसा के व्यवस्थित उपचार के लिए

प्रसिद्ध है। यह चार स्वतंत्र प्रमाणों को स्वीकार करता है : प्रत्यक्ष (धारणा), अनुमान (अनुमान), उपमान (तुलना), और शब्द (मौखिक गवाही)। अनुमान को उन वस्तुओं और सत्यों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है जो सीधे बोधगम्य नहीं हैं। उदाहरण के लिए, धुएं की धारणा से दूर पहाड़ी पर आग की उपस्थिति का अनुमान लगाना।

- **तर्क (R):** अनुमान का न्याय विश्लेषण वास्तव में इसे एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया के रूप में वर्णित करता है।
  - **लिंग/हेतु (चिह्न/कारण):** किसी संकेत या चिह्न (जैसे, धुआँ) की धारणा।
  - **व्याप्ति (अपरिवर्तनीय सहवर्ती):** हेतु और साध्य के बीच सार्वभौमिक, बिना शर्त और अपरिवर्तनीय संबंध का ज्ञान (उदाहरण के लिए, "जहाँ भी धुआँ है, वहाँ आग है")। यह ज्ञान आम तौर पर बार-बार अवलोकन और विपरीत उदाहरणों की अनुपस्थिति से प्राप्त होता है।
  - **साध्य (अनुमानित वस्तु):** वह अप्राप्य वस्तु या संपत्ति जिसका अस्तित्व अनुमान किया जा रहा हो (जैसे, अग्नि)।
  - **पाक ष (विषय):** वह स्थान जहाँ हेतु को माना जाता है और साध्य का अनुमान लगाया जाता है (जैसे, पहाड़ी)।
  - इस प्रक्रिया में परमार्श शामिल है, जो संश्लेषित निर्णय है "पाक ष में हेतु है जो हमेशा साध्य के साथ संगत है" (उदाहरण के लिए, "इस पहाड़ी में धुआँ है जो हमेशा आग के साथ होता है")। यह पाक ष में साध्य के अनुमानात्मक ज्ञान (अनुमिति) की ओर ले जाता है (उदाहरण के लिए, "इसलिए, इस पहाड़ी में आग है")।
- **संबंध:** तर्क (R) सही ढंग से बताता है कि न्याय में अनुमान को एक वैध और अलग प्रमाण क्यों माना जाता है। यह संरचित अनुमान प्रक्रिया का विवरण देता है जो किसी को तत्काल अनुभूति से परे नया ज्ञान प्राप्त करने की अनुमति देता है , इस प्रकार इसका स्वतंत्र ज्ञानात्मक मूल्य स्थापित करता है। न्याय विद्यालय सावधानीपूर्वक वैध अनुमान के लिए शर्तों को परिभाषित करता है और उन भ्रांतियों (हेत्वाभास) की पहचान करता है जो अनुमान प्रक्रिया को दूषित कर सकते हैं।

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणाएँ साख्य दर्शन के लिए केंद्रीय हैं ?

i. सत्कार्यवाद
ii. असत्कार्यवाद
iii. प्राक ऋ ति और उसके विकास
iv. परमा ण उकार ण अवदा
v. पुरु ष as की बहुलता
vi. ब्रह्म परम सत्य है
सही विकल्प चुनें:

a) केवल i, iii, और v
b) केवल ii, iv, और vi
c) केवल i, iii, iv, और v
d) केवल i, ii, iii, और v
e) सभी i, ii, iii, iv, v, और vi

उत्तर: a) केवल i, iii, और v

स्पष्टीकरण:

- **i. सत्कार्यवाद (पूर्व-अस्तित्व प्रभाव का सिद्धांत): यह** सामंख्य तत्वमीमांसा की आधारशिला है । यह इस बात पर जोर देता है कि प्रभाव (कार्य) अपने वास्तविक प्रकटीकरण से पहले अपने भौतिक कारण (कारण) में संभावित या अप्रकट रूप में पहले से मौजूद होता है । उदाहरण के लिए, बर्तन (प्रभाव) मिट्टी (कारण) में पहले से मौजूद होता है। सामंख्य इसके लिए कई तर्क प्रदान करता है, जैसे: असदकार न आत (जो अस्तित्व में नहीं है उसे अस्तित्व में नहीं लाया जा सकता), उपादानग्रह न आत (किसी विशिष्ट प्रभाव के लिए एक विशिष्ट भौतिक कारण की आवश्यकता होती है), आदि।
- **ii. असत्कार्यवाद (अस्तित्वहीन प्रभाव का सिद्धांत): न्याय-** वैशेषिक जैसे विद्यालयों द्वारा समर्थित यह सिद्धांत यह मानता है कि प्रभाव एक नई रचना है, जो अपने कारण में पहले से मौजूद नहीं है। यह साण्ख्य दृष्टिकोण के विपरीत है ।
- **iii. प्रकृति और उसके विकास:** साख्य एक द्वैतवादी दर्शन है जो दो परम वास्तविकताओं को मान्यता देता है: पुरुषोत्तम (चेतना) और प्रकृति (आदिम पदार्थ/प्रकृति)। प्रकृति ब्रह्मांड का अकारण भौतिक कारण है। यह तीन गुणों (सत्व, रजस, तम) से बना है। महत (बुद्धि), अहंकार (अहंकार), मनस (मन), पाँच तन्मात्राएँ (सूक्ष्म तत्व), पाँच महाभूत (स्थूल तत्व), पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (इंद्रियाँ) और पाँच कर्मेन्द्रियाँ (गति अंग) सहित संपूर्ण प्रकट जगत प्रकृति से विकसित होता है, जब पुरुषोत्तम की निकटता से इसका संतुलन बिगड़ जाता है ।
- **iv. परमाणु उकारण अवदा (कारण-कारण का परमाणु सिद्धांत): यह** वैशेषिक स्कूल का सिद्धांत है (और न्याय द्वारा स्वीकृत), जो मानता है कि भौतिक जगत शाश्वत, अविभाज्य परमाणुओं (परमाणु) से बना है। इसके विपरीत **,** साण्ख्य प्रकृति को अंतिम, निरंतर भौतिक कारण के रूप में मानता है , न **कि** असतत परमाणुओं के रूप में।
- **v. पुरुषोत्तम की बहुलता : साख्य** का मानना है कि कई अलग-अलग पुरुषोत्तम (चेतन आत्मा) हैं । उनकी बहुलता के तर्कों में विभिन्न प्राणियों के बीच अनुभवों, जन्मों, मृत्युओं और बंधन/मुक्ति की विविधता शामिल है। प्रत्येक पुरुषोत्तम शुद्ध चेतना है, जो प्रकृति और उसके क्रमिक रूपों से अलग है , और एक निष्क्रिय साक्षी के रूप में कार्य करता है।
- **vi. ब्रह्म परम सत्य है:** यह वेदांत दर्शन, विशेष रूप से अद्वैत वेदांत में एक केंद्रीय अवधारणा है, जो ब्रह्म को एकमात्र, अद्वैत परम सत्य के रूप में प्रस्तुत करता है। साख्य ,

नास्तिक (या अपने शास्त्रीय रूप में गैर-ईश्वरवादी) और द्वैतवादी (पुरूष अ-प्रक ऋति) होने के कारण , इस अर्थ में ब्रह्म को परम सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करता है।

इसलिए, सत्कार्यवाद, प्रकृति और उसके विकास, तथा पुरुषोत्तम की अनेकता , साख्य के केंद्रीय सिद्धांत हैं ।

प्रश्न 5. वैदिक और उपनिषदिक विचारधारा के संदर्भ में 'त' मुख्य रूप से क्या दर्शाता है?

A) देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पुजारियों द्वारा किया जाने वाला अनुष्ठानिक बलिदान।
B) व्यक्तिगत आत्म या आत्मा जो शाश्वत एवं अपरिवर्तनशील है।
C) ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था जो ब्रह्मांड, दिव्य और मानवीय क्षेत्रों को नियंत्रित करती है।
D) परम, पारलौकिक वास्तविकता, जिसे प्रायः ब्रह्म के समान माना जाता है।
E) गहरी, स्वप्नरहित नींद की अवस्था जहां व्यक्तिगत आत्मा ब्रह्मांडीय चेतना के साथ विलीन हो जाती है।

उत्तर: C) ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था जो ब्रह्मांड, दिव्य और मानवीय क्षेत्रों को नियंत्रित करती है।

स्पष्टीकरण:

- **ऋत (ब्रह्मांडीय व्यवस्था):** आरंभिक वैदिक विचार में, ऋत एक मौलिक अवधारणा है जो प्राकृतिक और नैतिक व्यवस्था, ब्रह्मांडीय कानून और सत्य के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करती है। यह ब्रह्मांड की नियमितताओं (जैसे, आकाशीय पिंडों की गति, ऋतुओं का चक्र) को नियंत्रित करता है और मनुष्यों के नैतिक आचरण और दैवीय क्षेत्र के कामकाज को भी निर्देशित करता है।
- **धर्म से संबंध:** ऋत को धर्म की बाद की, अधिक विस्तृत अवधारणा का अग्रदूत माना जाता है। जहाँ धर्म सामाजिक-नैतिक कर्तव्यों और कानूनों पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है, वहीं ऋत का दायरा व्यापक ब्रह्मांडीय है।
- **ऋत के संरक्षक : वरुण जैसे देवताओं को शुरू में** ऋत के प्राथमिक संरक्षक के रूप में देखा जाता था , जो यह सुनिश्चित करते थे कि ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था बनी रहे।
- **यज्ञ और ऋत :** यज्ञ (बलिदान) की संस्था को ऋत को बनाए रखने और उससे तालमेल बिठाने के लिए केंद्रीय माना जाता था । माना जाता था कि बलिदान का उचित प्रदर्शन ब्रह्मांडीय सद्भाव को बनाए रखता है।
- **अन्य विकल्पों से अंतर:**
  - a) यज्ञ स्वयं बलिदान है, ऋत को बनाए रखने का एक साधन है , स्वयं ऋत नहीं ।
  - b) आत्मा का तात्पर्य व्यक्तिगत स्व से है।
  - c) ब्रह्म परम वास्तविकता है, एक संबंधित लेकिन अलग अवधारणा। जबकि ऋत एक

व्यवस्थित वास्तविकता को दर्शाता है, ब्रह्म अस्तित्व के आधार के बारे में अधिक है।
- d) सुषुप्ति गहरी नींद की अवस्था है।

प्रश्न 6. सूची I के बौद्ध संप्रदायों का सूची II में उनके विशिष्ट दार्शनिक दृष्टिकोण से मिलान करें।

सूची I (बौद्ध विद्यालय)	सूची II (विशेषता स्थिति)
A. वैभव शिका	i. केवल चेतना (विज्ञानमात्रता); बाह्य वस्तुओं के अस्तित्व को नकारता है।
B. सौत्रान्तिक	ii. शून्यता; सभी घटनाएँ अंतर्निहित अस्तित्व (स्वभाव) से रहित हैं।
C. योगाचार	iii. अप्रत्यक्ष यथार्थवाद; बाह्य वस्तुओं का अनुमान चेतना में उनके प्रतिनिधित्व से लगाया जाता है।
D. मध्यमिका	iv. प्रत्यक्ष यथार्थवाद (सर्वास्तिवाद); अतीत, वर्तमान और भविष्य के धर्मों (अस्तित्व के तत्वों) के वास्तविक अस्तित्व को स्वीकार करता है।
E. प्रतीत्यसमुत्पाद	v. आश्रित उत्पत्ति; सभी घटनाएँ अन्य घटनाओं पर निर्भर होकर उत्पन्न होती हैं।

सही मिलान चुनें:
A) A-iv, B-iii, C-i, D-ii, E-v
B) A-iii, B-iv, C-v, D-ii, E-i
C) A-iv, B-i, C-iii, D-ii, E-v
D) A-iv, B-iii, C-ii, D-v, E-i
E) A-v, B-iii, C-iv, D-ii, E-i

उत्तर: a) A-iv, B-iii, C-i, D-ii, E-v

स्पष्टीकरण:
- **A. वैभव शिका - iv. प्रत्यक्ष यथार्थवाद (सर्वास्तिवाद):** हीनयान बौद्ध धर्म से संबंधित यह संप्रदाय प्रत्यक्ष यथार्थवाद की वकालत करता है। वे बाहरी वस्तुओं के वास्तविक अस्तित्व में विश्वास करते हैं और मानते हैं कि सभी धर्म (अस्तित्व के क्षणिक तत्व) अतीत, वर्तमान और भविष्य में वास्तविक हैं (सर्वास्तिवाद - "सिद्धांत कि सभी मौजूद हैं")। वे मानते हैं कि वस्तुओं को सीधे देखा जा सकता है।
- **B. सौत्रान्तिक - iii. अप्रत्यक्ष यथार्थवाद:** हीनयान संप्रदाय के सौत्रान्तिक प्रतिनिधिवादी या अप्रत्यक्ष यथार्थवादी हैं। वे बाहरी वस्तुओं के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, लेकिन मानते हैं कि इन वस्तुओं को सीधे नहीं देखा जा सकता। इसके बजाय, चेतना उनके अस्तित्व का

अनुमान उन रूपों या प्रतिनिधित्वों (आकार) के आधार पर लगाती है जो वे चेतना को प्रदान करते हैं। वे वस्तुओं की प्रत्यक्ष पहुँच के वैभव ऋक दृष्टिकोण की आलोचना के लिए जाने जाते हैं।

- **C. योगाचार (विज्ञानवाद) - i. केवल चेतना (विज्ञानप्ति-मात्रा): मैत्रेयनाथ,** असंग और वसुबंधु द्वारा स्थापित यह महायान संप्रदाय मानता है कि केवल चेतना (विज्ञान या विज्ञानप्ति) ही वास्तविक है। बाहरी वस्तुओं को स्वतंत्र अस्तित्व से वंचित किया जाता है और उन्हें चेतना (आलय-विज्ञान या भंडार चेतना) की मात्र अभिव्यक्तियाँ या प्रक्षेपण माना जाता है।
- **D. मध्यमिका - ii. शून्यता:** नागार्जुन द्वारा स्थापित, यह महायान स्कूल शून्यता (शून्यता) की अवधारणा पर जोर देता है। यह तर्क देता है कि सभी घटनाएँ (धर्म), जिसमें मन और पदार्थ दोनों शामिल हैं, किसी भी अंतर्निहित, स्वतंत्र अस्तित्व या स्व-प्रकृति (स्वभाव) से रहित हैं। वे निर्भरता से उत्पन्न होते हैं (प्रतीत्यसमुत्पाद)। यह शून्यवाद नहीं है, बल्कि शाश्वतवाद और विनाशवाद के बीच का एक मध्य मार्ग है।
- **E. प्रतीत्यसमुत्पाद - v. आश्रित उत्पत्ति:** सभी बौद्ध संप्रदायों द्वारा स्वीकृत एक मौलिक सिद्धांत होने के बावजूद, यह शून्यता की मध्यमिका अवधारणा को समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह बताता है कि सभी घटनाएँ कारणों और स्थितियों पर निर्भर होकर उत्पन्न होती हैं और समाप्त होती हैं। "यह अस्तित्व, जो बन जाता है; इसके उत्पन्न होने से, वह उत्पन्न होता है।" यह दुख की प्रक्रिया और मुक्ति के मार्ग की व्याख्या करता है।

प्रश्न 7. (उत्तर): पूर्वमीमांसा स्कूल शब्द-नित्यवाद, ध्वनि (विशेष रूप से , वैदिक शब्द) की शाश्वतता के सिद्धांत का दृढ़ता से समर्थन करता है।
तर्क (R): मीमांसकों का मानना है कि वेद अपौरुषेय (लेखकहीन) और शाश्वत रूप से वैध हैं , और इसलिए, उन्हें बनाने वाले शब्द भी शाश्वत होने चाहिए ताकि धर्म को निर्धारित करने के लिए उनके अपरिवर्तनीय अधिकार और अर्थ को सुनिश्चित किया जा सके।

कोड:
a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।
e) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

उत्तर: a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A):** पूर्व-मीमांसा संप्रदाय , मुख्य रूप से वेदों की व्याख्या और धर्म के साधन के रूप में वैदिक अनुष्ठानों (यज्ञों) की स्थापना से संबंधित है, वास्तव में शब्द-नित्यवाद के सिद्धांत का समर्थन करता है। इसका मतलब है कि वे मानते हैं कि ध्वनियाँ (वर्ण , या ध्वनियाँ, जो शब्दों का निर्माण करती हैं) शाश्वत हैं, निर्मित नहीं हैं। उच्चारण के माध्यम से किसी शब्द की अभिव्यक्ति केवल पहले से मौजूद शाश्वत ध्वनि का रहस्योद्घाटन है।
- **कारण (R):** मीमांसा दर्शन वेदों की प्रामाणिकता को सर्वोच्च महत्व देता है ।
    - **अपौरुषेयत्व :** वे तर्क देते हैं कि वेद अपौरुषेय हैं , जिसका अर्थ है कि वे किसी मानव या दैवीय लेखक द्वारा रचित नहीं हैं। यह लेखकहीनता **उनके** अचूकता के दावे के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई भी लिखित पाठ अपने लेखक की सीमाओं और संभावित त्रुटियों के अधीन होगा।
    - **धर्म के लिए शाश्वत वैधता:** मीमांसा के अनुसार, वेदों का प्राथमिक उद्देश्य धर्म (कर्तव्य, धार्मिकता, मुख्य रूप से अनुष्ठानों के रूप में) का आदेश देना है। इन आदेशों को शाश्वत रूप से मान्य और सार्वभौमिक रूप से बाध्यकारी होने के लिए, जिस माध्यम से उन्हें व्यक्त किया जाता है - वैदिक शब्द - भी शाश्वत और अपरिवर्तनीय होने चाहिए। यदि शब्द बनाए गए या क्षणभंगुर थे, तो उनके अर्थ बदल सकते थे, और वैदिक आदेशों का अधिकार समझौता हो सकता था।
    - **शब्द-नित्यवाद और वैदिक प्राधिकरण के बीच संबंध:** इस प्रकार, वैदिक शब्दों की शाश्वतता (शब्द-नित्यवाद) धर्म के मामलों में वेदों के पूर्ण, स्वतंत्र और शाश्वत प्राधिकरण के मीमांसा सिद्धांत के लिए एक आवश्यक पूर्वधारणा है।
- **संबंध:** तर्क (R) अभिकथन (A) के लिए मुख्य दार्शनिक औचित्य प्रदान करता है। वेदों की अलिखित और शाश्वत वैध प्रकृति में विश्वास उन्हें बनाने वाली ध्वनियों/शब्दों की शाश्वतता के सिद्धांत को आवश्यक बनाता है। यह सुनिश्चित करता है कि वैदिक आदेशों का अर्थ और निर्देशात्मक बल सभी समय में स्थिर और विश्वसनीय बना रहे।

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से कौन सा अद्वैत वेदांत के प्रमुख पहलू हैं जो शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित किए गए थे ?

i. सगुण स्वरूप ब्रह्म ही परम सत्य है।
ii. विवर्तवाद (प्रतीत परिवर्तन या अध्यारोपण का सिद्धांत)।
iii. सत्ता (वास्तविकता) के तीन ग्रेड: पारमार्थिक, व्यवहारिका, और प्रतिभासिका।
iv. माया एक वास्तविक शक्ति है जो ब्रह्म के साथ सह-शाश्वत है।
v.जीव (व्यक्तिगत आत्मा) अंततः ब्रह्म के समान है।
vi. परिण आमवाद (वास्तविक परिवर्तन का सिद्धांत) संसार की व्याख्या के रूप में।

सही विकल्प चुनें:

a) केवल i, ii, और v
b) केवल ii, iii, और v
c) केवल ii, iii, iv, और v
d) केवल i, iv, और vi
e) सभी i, ii, iii, iv, v, और vi

उत्तर: b) केवल ii, iii, और v

स्पष्टीकरण:

- **i. सगुण ब्रह्म (गुणों सहित) परम सत्य है:** अद्वैत वेदांत निर्गुण ब्रह्म (गुणहीन, गुणहीन, अनिर्धारित) को परम, निरपेक्ष सत्य (पारमार्थिक सत्ता) मानता है । सगुण ब्रह्म (या ईश्वर, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमान जैसे गुणों वाला ईश्वर) को केवल अनुभवजन्य (व्यावहारिक) दृष्टिकोण से ही वास्तविक माना जाता है, क्योंकि वह माया द्वारा वातानुकूलित ब्रह्म है। इसलिए, यह कथन गलत है क्योंकि यह सगुण ब्रह्म को *परम बताता है*।
- **ii. विवर्तवाद (प्रकट परिवर्तन या आरोपण का सिद्धांत):** यह अद्वैत का एक केंद्रीय सिद्धांत है। यह दुनिया के ब्रह्म पर एक स्पष्ट परिवर्तन या आरोपण (अध्यास) के रूप में प्रकट होने की व्याख्या करता है, ठीक वैसे ही जैसे मंद प्रकाश में रस्सी साँप के रूप में दिखाई देती है। दुनिया ब्रह्म का वास्तविक परिवर्तन नहीं है, बल्कि एक भ्रामक आभास है, और ब्रह्म अपरिवर्तित रहता है।
- **iii. सत्ता (वास्तविकता) के तीन स्तर:** अद्वैत वास्तविकता के तीन स्तरों में अंतर करता है:
  - **पारमार्थिक सत्ता (परम वास्तविकता): यह** निर्गुण ब्रह्म की वास्तविकता है , जो शाश्वत और अपरिवर्तनशील है।
  - **व्यावहारिक सत्ता (अनुभवजन्य/पारंपरिक वास्तविकता):** यह अनुभव की रोजमर्रा की दुनिया की वास्तविकता है, जिसमें सगुण ब्रह्म, व्यक्तिगत आत्माएं (जीव) और अभूतपूर्व ब्रह्मांड शामिल हैं । ब्रह्म की प्राप्ति तक इसे सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए वास्तविक माना जाता है।
  - **प्रातिभाषिक सत्ता (प्रकट/भ्रामक वास्तविकता):** यह भ्रम की वास्तविकता है, जैसे रस्सी या स्वप्न में दिखाई देने वाला साँप। यह अनुभवजन्य ज्ञान द्वारा भी उपलक्षित (बाधिता) है।
- **iv. माया ब्रह्म के साथ सह-शाश्वत एक वास्तविक शक्ति के रूप में:** माया भ्रम या ब्रह्मांडीय अज्ञान का सिद्धांत है जो ब्रह्म की वास्तविक प्रकृति को ढंकता है और बहुआयामी दुनिया को प्रक्षेपित करता है। जबकि यह दुनिया की उपस्थिति का कारण है, अद्वैत माया को अनिर्वचनीय (वास्तविक या अवास्तविक के रूप में अवर्णनीय) के रूप में वर्णित करता है और ब्रह्म के साथ उसी तरह सह-शाश्वत नहीं है जिस तरह ब्रह्म वास्तविक है। यह अनादि (अनादि) है लेकिन सच्चे ज्ञान (ब्रह्म-ज्ञान) की प्राप्ति पर इसका अंत होता है। यह अपने

अस्तित्व के लिए ब्रह्म पर निर्भर है। यह पारमार्थिक अर्थ में "वास्तविक" नहीं है।

- **जीव (व्यक्तिगत आत्मा) अंततः ब्रह्म के समान है:** यह महावाक्य (महान कथन) है "तत्त्वम् असि" (वह तुम हो)। अद्वैत सिखाता है कि जीव की स्पष्ट वैयक्तिकता और पृथकता अविद्या (अज्ञान) के कारण सीमित उपाधियों के कारण है। अपने मूल स्वभाव में, जीव ब्रह्म से अलग नहीं है।
- **vi. परिण आमवाद (वास्तविक परिवर्तन का सिद्धांत) दुनिया की व्याख्या के रूप में:** यह सिद्धांत, जो मानता है कि प्रभाव कारण का वास्तविक परिवर्तन है (जैसे दूध का दही में बदलना), साख्य और विशिष्ट अद्वैत वेदांत जैसे स्कूलों द्वारा क्रमशः प्रकृति या ब्रह्म से दुनिया के निर्माण की व्याख्या करने के लिए स्वीकार किया जाता है । अद्वैत परम वास्तविकता के लिए विवर्तवाद के पक्ष में परिण आमवाद को अस्वीकार करता है , हालांकि यह प्रकट दुनिया के भीतर परिवर्तनों के लिए अनुभवजन्य स्तर पर परिण आमवाद को स्वीकार कर सकता है।

इसलिए, विवर्तवाद, सत्ता के तीन स्तर, तथा जीव और ब्रह्म की परम पहचान अद्वैत वेदांत के प्रमुख पहलू हैं।

Q9. वैशेषिक स्कूल सभी वास्तविकों को 'पदार्थों' के अंतर्गत वर्गीकृत करता है। निम्नलिखित में से कौन सा प्राथमिक पदार्थ नहीं है जिसे शुरू में कन्नड़ ने गिना था (हालाँकि बाद में वैशेषिक ने , अक्सर न्याय के साथ मिलकर, सूची का विस्तार या संशोधन किया)?

a) द्रव्य (पदार्थ)
b) गु ण अ (गुणवत्ता)
c) कर्म (क्रिया/गति)
d) सामान्य (सामान्यता/सार्वभौमिक)
e) अभाव (अस्तित्वहीनता)

उत्तर: e) अभाव (अस्तित्वहीनता)

स्पष्टीकरण:

- वैशेषिक प्रणाली, जिसकी स्थापना कानाद (जिसे उलूक के नाम से भी जाना जाता है) द्वारा की गई थी , एक परमाणुवादी और यथार्थवादी दर्शन है जिसका उद्देश्य ब्रह्मांड में मौजूद सभी चीजों (वास्तविक) को वर्गीकृत करना है। इन श्रेणियों को 'पदार्थ' (शाब्दिक रूप से, "किसी शब्द का अर्थ" या "श्रेणियाँ जिनसे शब्द संदर्भित होते हैं") कहा जाता है।
- **का न आडा के मूल छह पदार्थ:** अपने वैश्य ṣ इका सूत्र में, का न आदा ने मूल रूप से छह सकारात्मक (भाव) पदार्थों की गणना की:
  1. **द्रव्य (पदार्थ):** वह आधार जहाँ गुण और क्रियाएँ विद्यमान रहती हैं। नौ द्रव्य हैं: पृथ्वी (पृ.तिवि) , जल (अप), अग्नि (तेजस), वायु (वायु), आकाश (आकाश), काल (काल),

स्थान (दिक), आत्म (आत्मा) और मन (मनस)।

2. **गुण (गुणवत्ता):** वे गुण जो पदार्थों में निहित होते हैं लेकिन उनमें स्वयं गुण या क्रियाएँ नहीं होतीं। कानाडा ने सत्रह को सूचीबद्ध किया, **जिसे** बाद में बढ़ाकर चौबीस कर दिया गया (जैसे, रंग, स्वाद, गंध, स्पर्श, संख्या, आयाम)।
3. **कर्म (क्रिया/गति):** गुणों की तरह, क्रियाएँ भी केवल पदार्थों में ही होती हैं और स्वयं गुणों या अन्य क्रियाओं से रहित होती हैं। उदाहरणों में ऊपर की ओर गति, नीचे की ओर गति, संकुचन, विस्तार और सामान्य गति शामिल हैं।
4. **सामान्य (सामान्यता/सार्वभौमिक):** यह उन सामान्य गुणों या सार्वभौमिकताओं को संदर्भित करता है जो एक वर्ग के कई व्यक्तियों में मौजूद होते हैं (जैसे, सभी गायों में "गायपन")। यह शाश्वत है और पदार्थों, गुणों और कार्यों में निहित है।
5. **विशेष (विशिष्टता):** ये वे परम विशिष्ट विशेषताएँ हैं जो शाश्वत पदार्थों (परमाणु, आत्मा, मन, स्थान, समय, आकाश) में रहती हैं, जो प्रत्येक को एक ही तरह के अन्य पदार्थों से अद्वितीय और अलग बनाती हैं। इसी श्रेणी के कारण इस स्कूल को इसका नाम मिला है।
6. **समवाय (अंतर्ग्रहण):** यह दो सत्ताओं के बीच घनिष्ठ, अविभाज्य और शाश्वत संबंध है, जहां एक दूसरे के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता (उदाहरण के लिए, एक पदार्थ और उसके गुणों/क्रियाओं के बीच संबंध, एक संपूर्ण और उसके भागों के बीच संबंध, एक सार्वभौमिक और उसके व्यक्तियों के बीच संबंध)।

- **अभाव (अस्तित्वहीनता):** अभाव (अस्तित्वहीनता) की श्रेणी बाद में शुरू की गई, विशेष रूप से प्रशस्तपाद जैसे टिप्पणीकारों द्वारा और न्याय-वैशेषिक समन्वय विद्यालय द्वारा आगे विकसित की गई । जबकि कन्नड़ की प्रणाली में निहित रूप से गैर-अस्तित्व से निपटा गया था, इसे उनके द्वारा सातवें पदार्थ के रूप में स्पष्ट रूप से सूचीबद्ध नहीं किया गया था। बाद के विचारकों ने एक पूर्ण ऑन्टोलॉजिकल योजना के लिए इसके महत्व को पहचाना और इसे विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया (जैसे, प्रागभाव, प्रध्वं सभाव , अत्यंतभाव, अन्योन्याभाव)।

इसलिए, अभाव उन प्राथमिक पदार्थों में से एक नहीं था, जिनकी गणना स्वयं कन्नड़ ने आरम्भ में की थी।

प्रश्न 10. अभिकथन (A): पतंजलि की योग प्रणाली, साख्य के आध्यात्मिक ढांचे को साझा करते हुए , ईश्वर (भगवान) की अवधारणा को प्रस्तुत करती है।
कारण (R): योग दर्शन में, ईश्वर को मुख्य रूप से ब्रह्मांड के निर्माता, पालक और विध्वंसक के रूप में माना जाता है, जो प्रकृति से ब्रह्मांडीय विकास की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल है ।

कोड:
a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(c) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।
e) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

उत्तर: c) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A):** योग सूत्रों में उल्लिखित पतंजलि की योग प्रणाली को अक्सर "ईश्वरवादी साख्य" (सेश्वर साख्य) कहा जाता है । यह शास्त्रीय साख्य के द्वैतवादी तत्वमीमांसा को बड़े पैमाने पर स्वीकार करता है , जिसमें पुरुषोत्तम (चेतना), प्रकृति (आदिम पदार्थ), गुण और प्रकृति से प्रकट दुनिया के विकास की प्रक्रिया की अवधारणाएँ शामिल हैं । हालाँकि, एक महत्वपूर्ण प्रस्थान बिंदु योग द्वारा ईश्वर (ईश्वर) की स्वीकृति है। शास्त्रीय साख्य को आम तौर पर नास्तिक या गैर-ईश्वरवादी माना जाता है।
- **कारण (R):** पतंजलि के योग में ईश्वर की भूमिका काफी विशिष्ट है और कई आस्तिक प्रणालियों में पाए जाने वाले निर्माता, पालक और विध्वंसक की पारंपरिक ब्रह्मांड संबंधी भूमिकाओं से अलग है।
  - **ईश्वर एक विशेष पुरु ष ए के रूप में:** योग में, ईश्वर को एक "विशेष पुरु ष ए" (पुरु ष अ-विषे ष ए) के रूप में परिभाषित किया गया है, जो कष्टों (क्लेश), कर्म, उसके फल (विपाक), और अव्यक्त छापों (आशय) से अछूता है। (योग सूत्र 1.24: क्लेश-कर्म-विपाक-अशायैर-अपराम् ऋषि अ ः पुरु ष अ-विशेष ष अ ईश्वरः) ।
  - **भक्ति/ध्यान का उद्देश्य (ईश्वर- प्रणिधान):** ईश्वर के प्रति भक्ति या ध्यान (ईश्वर-प्रणिधान) अष्टांग योग में नियमों (पालन) में से एक है और इसे समाधि (एकाग्रता, ध्यान में तल्लीनता) प्राप्त करने का एक साधन माना जाता है। (योग सूत्र II.1, II.32, II.45)। यह मन को शांत करने और बाधाओं को दूर करने में मदद करता है ।
  - **मूल शिक्षक:** ईश्वर को सबसे प्रारंभिक शिक्षकों का भी शिक्षक बताया गया है (योग सूत्र 1.26: स ए स पूर्वे स अम् अपि गुरु : कालेना अनवच्छेदात्), जो समय से अप्रभावित हैं।
  - **सृष्टिकर्ता ईश्वर नहीं:** योग सूत्र ईश्वर को ब्रह्मांड के निर्माण, पालन या विघटन का श्रेय नहीं देते हैं। विकास की ब्रह्मांडीय प्रक्रिया को पुरुष और प्रकृति की परस्पर क्रिया के माध्यम से समझाया गया है , जैसा कि साख्य में है । ईश्वर की भूमिका ब्रह्मांडीय होने के बजाय मोक्ष संबंधी और ध्यान संबंधी है, जो योगी को कैवल्य (मुक्ति) के मार्ग पर सहायता प्रदान करती है।
- **संबंध:** जबकि अभिकथन (A) सत्य है (योग ईश्वर को स्वीकार करता है), तर्क (R) योग में ईश्वर की भूमिका का गलत वर्णन करता है। ईश्वर मुख्य रूप से योग प्रणाली में एक सृजनकर्ता ईश्वर नहीं है, बल्कि एक विशेष, शाश्वत रूप से मुक्त पुरुष है जो ध्यान के लिए

एक आदर्श और आध्यात्मिक प्रगति में बाधाओं पर काबू पाने में सहायक है। इसलिए, (R) गलत है।

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (HINDI)
Chandigarh

प्रोफेसर्स अड्डा के प्रीमियम कोर्स ने मुझे एक ही स्थान पर सब कुछ दिया - संरचित नोट्स, MCQ बैंक, PYQ और ट्रेंड विश्लेषण। जिस तरह से इसे पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा गया था, उससे मुझे संगठित और आत्मविश्वासी बने रहने में मदद मिली।

Ravindra Yadav
UGC NET (PHYSICAL EDUCATION)
Jaipur

प्रीमियम समूह में शामिल होना मेरा सबसे अच्छा निर्णय था। दैनिक प्रश्नोत्तरी चुनौतियों, सलाहकार मार्गदर्शन और केंद्रित चर्चाओं ने मुझे अनुशासित और परीक्षा के लिए तैयार रखा।

Priya Mehta
UGC NET (ECONOMICS)
Sikar

प्रोफेसर्स अड्डा का अध्ययन पाठ्यक्रम सफलता के लिए एक व्यक्तिगत रोडमैप की तरह है। लाइव सत्र और लक्षित संशोधन योजनाएं मुझे पहले प्रयास में अपनी परीक्षा पास करने में मदद करने में महत्वपूर्ण थीं।

Swati Verma
UGC NET (GEOGRAPHY)
Ahmedabad

प्रोफेसर्स अड्डा प्रीमियम कोर्स को जो चीज अद्वितीय बनाती है, वह है उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री और समर्पित सहायता समूह का संयोजन। इसने मुझे पूरे समय प्रेरित और जवाबदेह बनाए रखा।

Aman Joshi
UGC NET (HOME SCIENCE)
Prajagraj

प्रीमियम समूह ने मुझे गंभीर उम्मीदवारों और मार्गदर्शकों तक पहुंच प्रदान की, जिन्होंने हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। समूह से सहकर्मी सीखना, संदेह सत्र और प्रेरणा बेजोड़ थी।

Riya Sharma
UGC NET (LIBRARY SCIENCE)
Patna

प्रोफेसर्स अड्डा के मार्गदर्शकों से लगातार मिलने वाला प्रोत्साहन ही मुझे आगे बढ़ने में मदद करता रहा। उनके सहयोग से मुझे तब भी प्रेरित रहने में मदद मिली, जब पाठ्यक्रम से pressure था।

Anjali Singh
UGC NET (PHILOSOPHY)
Indore

प्रोफेसर अड्डा ने मुझे सिखाया कि कड़ी मेहनत जितनी ही महत्वपूर्ण है स्मार्ट तैयारी। उनकी रणनीतिक अध्ययन योजना और प्रेरक बातचीत ने मेरी सफलता में बहुत बड़ा अंतर ला दिया।

Aditya Verma
UGC NET (SANSKRIT)
Guwahati

संस्थान न केवल उत्कृष्ट अध्ययन संसाधन प्रदान करता है, बल्कि आपका आत्मविश्वास भी बढ़ाता है। प्रेरक सत्रों ने मुझे परीक्षा की चिंता से उबरने और सकारात्मक मानसिकता बनाए रखने में मदद की।

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

YOUR SUCCESS IS OUR MISSION
CALL US 7690022111
PROFESSORS ADDA

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

Our Toppers

+91 96108[redacted]
last seen today at 6:08 pm

Thank you for contacting Professors Adaa! Please let us know how we can help you! 1:25 pm

Congratulations 🏆🏆 🔥🔥💐💐
Please tell us about your result & score card.
Team Professors Adda 👉 7690022111
1:25 pm

Today

Hello Sir 6:01 pm

University Grants Commission (UGC)-NET _ India-1.pdf
1 page • 297 kB • PDF
6:01 pm

नमस्ते ProfessorsAdda,

मुझे ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मेरा JRF UGC NET दिसंबर 2024 cycle में हो गया है, और इसमें आपकी मदद और मार्गदर्शन का बहुत बड़ा योगदान रहा है। 🥰

मेरे पास बहुत सारी किताबें थीं और मैंने खुद के नोट्स भी बनाए थे, लेकिन फिर भी मन में डर था, समझ नहीं आ रहा था कि क्या पढ़ूं, क्या छोड़ूं। उस समय आपके गाइडेंस, सपोर्ट और स्टडी मटेरियल ने मुझे रास्ता दिखाया।

मुझे लगता था कि मेरी सब्जेक्ट की तैयारी बहुत कम है, लेकिन आपके 10 यूनिट की बुकलेट्स, जिनमें टॉपिक-वाइज नोट्स, फ्लोचार्ट्स और माइंड मैप्स थे, उन्होंने पूरे विषय को इतनी आसानी से कवर करा दिया कि मुझे वीडियो तक देखने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

नोट्स पूरी तरह अपडेटेड थे, और करंट-बेस्ड प्रश्न भी आसानी से कवर हो गए। परीक्षा के समय ऐसा लग रहा था मानो सारे सवाल नोट्स से ही आ रहे हैं, जिससे मे... Read more
6:03 pm

Congratulations 💐💐💐
आपको सफलता मुबारक हो। आप deseve करते थे। हमने बस साथ दिया
All The Best 👍💯
6:06 pm

Thanku so Much Sir 6:08 pm

Message

+91 9148[redacted]
~ Asif Choudari
Not a contact • No common groups
Safety tools
Block Add

Hello_Team_ProfessorsAdda I have cleared JRF
2:33 am

Congratulations 🏆🏆 🔥🔥💐💐
Please tell us about your result & score card.
Team Professors Adda 👉 7690022111
2:33 am

Congratulations for JRF CHAMPION🏆
All the best 👍🏅📲
Stay connected dear Futute Professor 🏆🏆

📞 +91 7690022111 +91 9216228788

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Chandigarh

प्रोफेसर्स अड्डा के प्रीमियम कोर्स ने मुझे एक ही स्थान पर सब कुछ दिया - संरचित नोट्स, MCQ बैंक, PYQ और ट्रेंड विश्लेषण। जिस तरह से इसे पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा गया था, उससे मुझे संगठित और आत्मविश्वासी बने रहने में मदद मिली।

Ravindra Yadav
UGC NET (PAPER 1)
Jaipur

प्रीमियम समूह में शामिल होना मेरा सबसे अच्छा निर्णय था। दैनिक प्रश्नोत्तरी चुनौतियों, सलाहकार मार्गदर्शन और केंद्रित चर्चाओं ने मुझे अनुशासित और परीक्षा के लिए तैयार रखा।

Priya Mehta
UGC NET (PAPER 1)
Sikar

प्रोफेसर्स अड्डा का अध्ययन पाठ्यक्रम सफलता के लिए एक व्यक्तिगत रोडमैप की तरह है। लाइव सत्र और लक्षित संशोधन योजनाएं मुझे पहले प्रयास में अपनी परीक्षा पास करने में मदद करने में महत्वपूर्ण थीं।

Swati Verma
UGC NET (PAPER 1)
Ahmedabad

प्रोफेसर्स अड्डा प्रीमियम कोर्स को जो चीज अद्वितीय बनाती है, वह है उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री और समर्पित सहायता समूह का संयोजन। इसने मुझे पूरे समय प्रेरित और जवाबदेह बनाए रखा।

Aman Joshi
UGC NET (PAPER 1)
Prajagraj

प्रीमियम समूह ने मुझे गंभीर उम्मीदवारों और मार्गदर्शकों तक पहुंच प्रदान की, जिन्होंने हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। समूह से सहकर्मी सीखना, संदेह सत्र और प्रेरणा बेजोड़ थी।

Riya Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Patna

प्रोफेसर्स अड्डा के मार्गदर्शकों से लगातार मिलने वाला प्रोत्साहन ही मुझे आगे बढ़ने में मदद करता रहा। उनके सहयोग से मुझे तब भी प्रेरित रहने में मदद मिली, जब पाठ्यक्रम से pressure था।

Anjali Singh
UGC NET (PAPER 1)
Indore

प्रोफेसर अड्डा ने मुझे सिखाया कि कड़ी मेहनत जितनी ही महत्वपूर्ण है स्मार्ट तैयारी। उनकी रणनीतिक अध्ययन योजना और प्रेरक बातचीत ने मेरी सफलता में बहुत बड़ा अंतर ला दिया।

Aditya Verma
UGC NET (PAPER 1)
Guwahati

संस्थान न केवल उत्कृष्ट अध्ययन संसाधन प्रदान करता है, बल्कि आपका आत्मविश्वास भी बढ़ाता है। प्रेरक सत्रों ने मुझे परीक्षा की चिंता से उबरने और सकारात्मक मानसिकता बनाए रखने में मदद की।

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Exclusive हिंदी ग्रुप

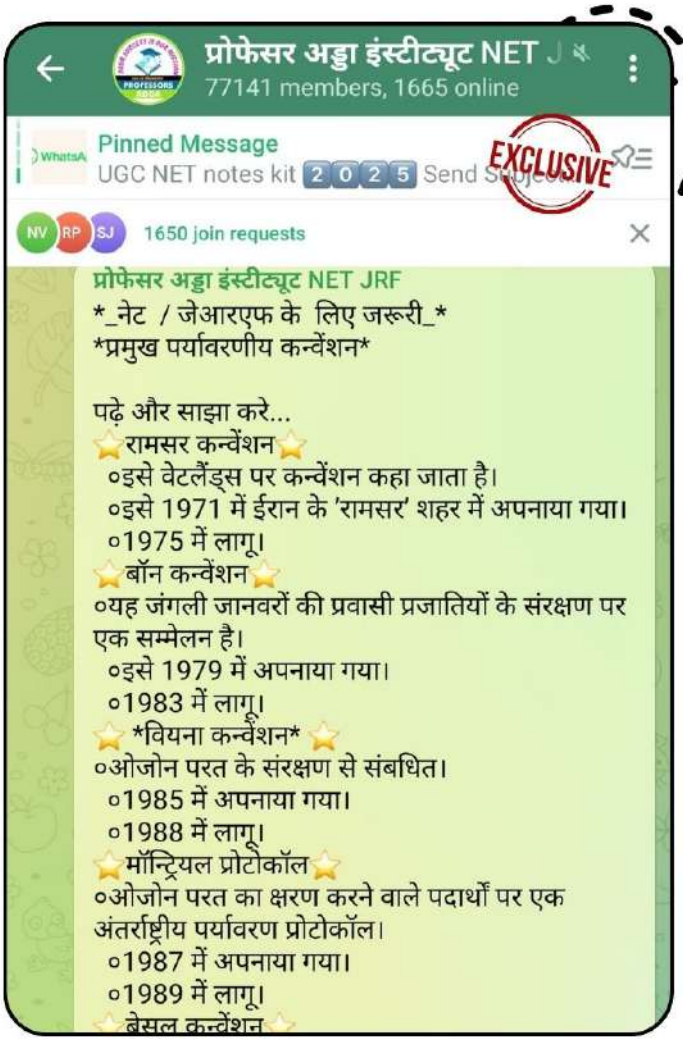

INDIA'S NO 1 UGC NET GROUP

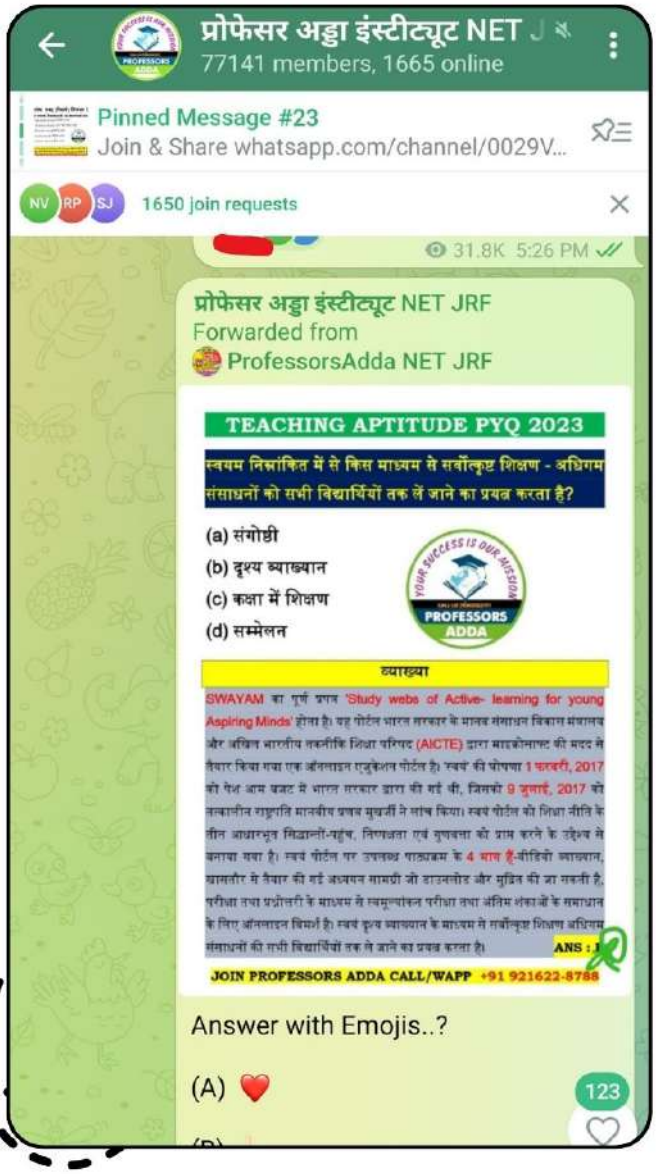

CLICK HERE TO JOIN

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

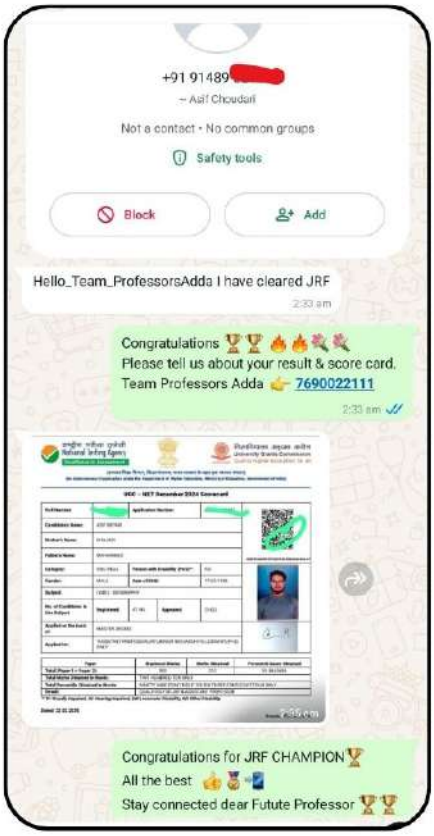

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

MANY MORE SELECTION

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

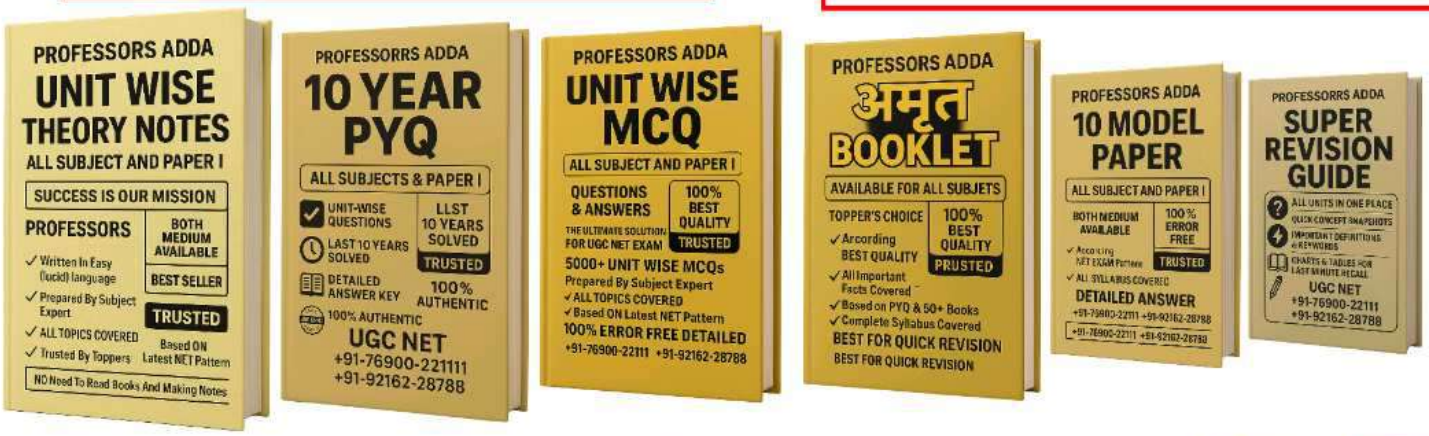

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

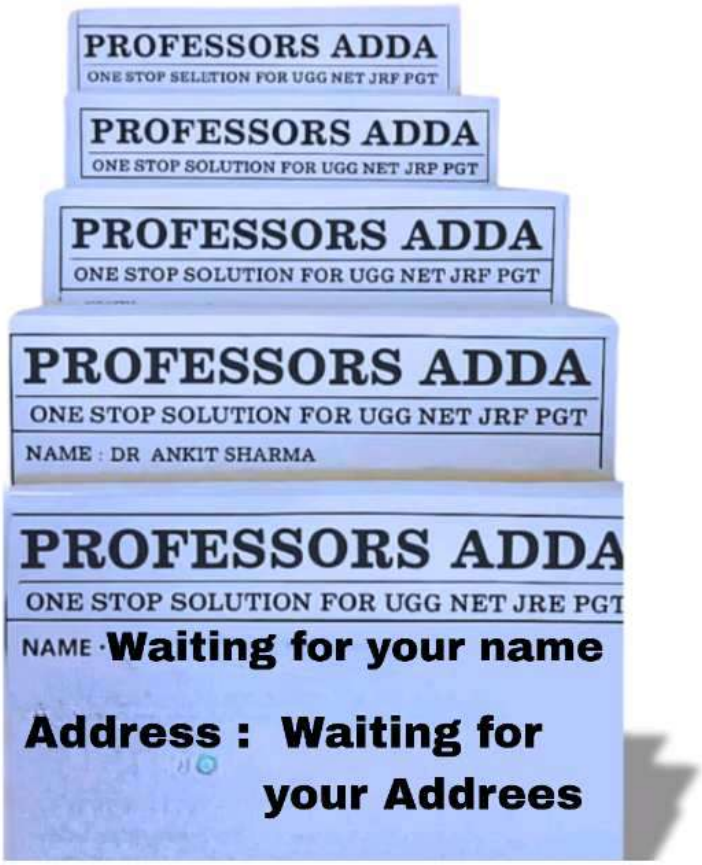

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

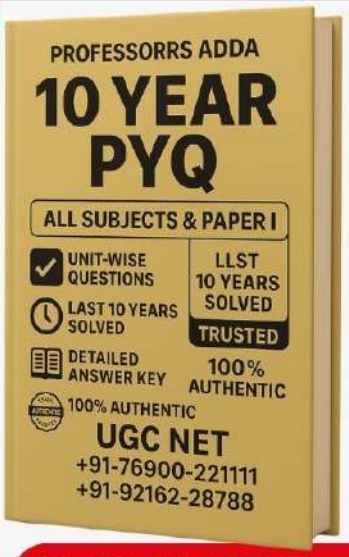

CLICK HERE

NEW PRODUCT

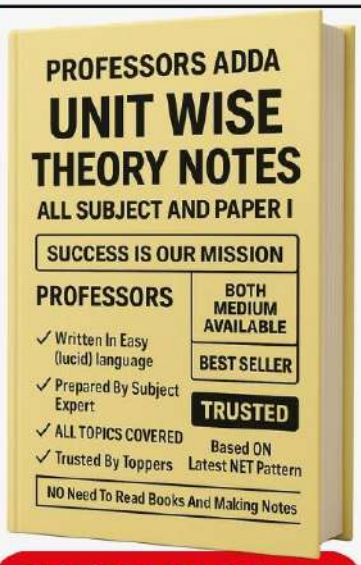

CLICK HERE

NEW PRODUCT

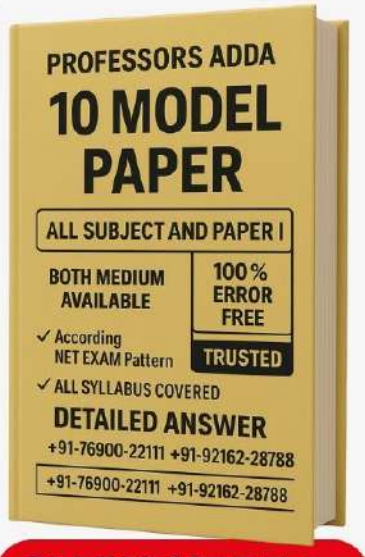

CLICK HERE

NEW PRODUCT

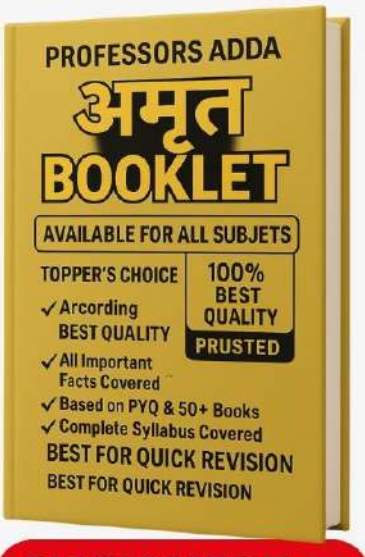

CLICK HERE

NEW PRODUCT

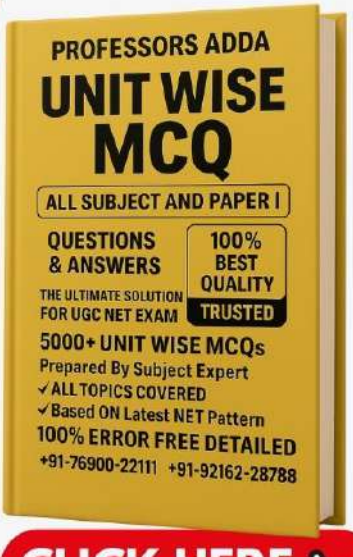

CLICK HERE

NEW PRODUCT

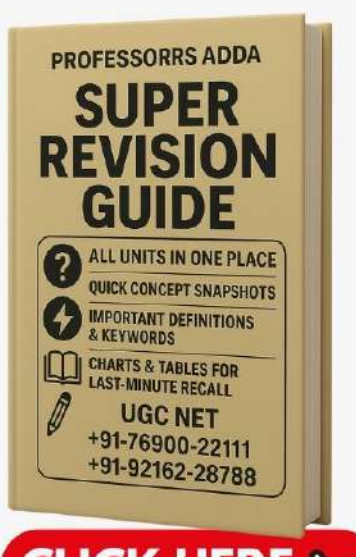

CLICK HERE

+91 7690022111+91 9216228788